बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 124 ● नई दिल्ली ● बुधवार 25 फरवरी 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

डिप्रेशन से जूझ रहे व्यक्ति ने मेट्रो स्टेशन पर ट्रेन के आगे कूदकर जान दी, मचा हड़कंप

नई दिल्ली । उत्तम नगर ईस्ट मेट्रो स्टेशन पर मंगलवार सुबह ट्रेन के सामने छलांग लगाकर 45 साल के व्यक्ति ने खुदकुशी कर ली। मृतक की शिनाख्त करोली राजस्थान निवासी महाराज सिंह के रूप में हुई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मेट्रो पुलिस उपायुक्त कुशल पाल सिंह ने बताया कि मंगलवार को 10.12 बजे जनकपुरी मेट्रो स्टेशन थाना पुलिस को एक शख्स के उत्तम नगर ईस्ट मेट्रो स्टेशन पर ट्रेन के सामने छलांग लगाने की जानकारी मिली। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला।

एआई समिट में प्रदर्शन मामला: IYC अध्यक्ष उदय भानु चिब गिरफ्तार, कोर्ट ने चार दिन की पुलिस हिरासत में भेजा

नई दिल्ली । दिल्ली पुलिस ने पिछले हफ्ते एआई इम्पैक्ट समिट में भारतीय युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के विरोध प्रदर्शन के मामले में यूथ कांग्रेस अध्यक्ष उदय भानु चिब को गिरफ्तार किया है। इस मामले में यह 8वीं गिरफ्तारी है। दिल्ली पुलिस ने इंडियन यूथ कांग्रेस के दिल्ली अध्यक्ष उदय भानु चिब को भी सोमवार को पूछताछ के लिए बुलाया था। गिरफ्तार की बाद पुलिस ने उदय भानु चिब को पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया है। इससे पहले सोमवार को तीन और आरोपियों जितेंद्र यादव, राजा गुर्जर व अजय कुमार को ग्वालियर से गिरफ्तार किया गया था। दिल्ली पुलिस ने विरोध प्रदर्शन वाले दिन युवा कांग्रेस के चार कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया था। इनके खिलाफ तिलक मार्ग थाने में मामला दर्ज किया गया था। कोर्ट ने उदय भानु चिब को चार दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है। दिल्ली पुलिस ने उदय भानु चिब की सात दिन की कस्टडी मांगी थी। पुलिस ने उन्हें मुख्य साजिशकर्ता (मास्टरमाइंड) करार देते हुए पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया। दिल्ली पुलिस ने कहा कि चिब, जो इंडियन यूथ कांग्रेस के प्रेसिडेंट हैं, उन्होंने साजिश रची और प्रोटेस्ट करने वालों को लॉजिस्टिक्स दिए। दिल्ली पुलिस ने कहा कि केस की जांच के लिए सात दिन की कस्टडी की जरूरत है। वहीं, सीनियर वकील संजय घोष उदय भानु चिब की तरफ से पेश हुए। उन्होंने दलील दी कि उनके मुवक्किल फरार नहीं हैं, वह दिल्ली में ही मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारी बिना हथियार, यहां तक कि बिना लाठी के वहां पहुंचे थे, ऐसे में इसे दंगा जैसी स्थिति बताना गलत है। घोष ने यह भी टिप्पणी की कि गंभीर अपराधों के बीच पुलिस टी-शर्ट बरामद करने को मुद्दा बना रही है, जो चिंताजनक है।

केस क्राइम ब्रांच को ट्रांसफर

दिल्ली पुलिस सूत्रों के मुताबिक, इंडियन यूथ कांग्रेस एआई समिट प्रोटेस्ट केस दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच को ट्रांसफर कर दिया गया है। इंटर-स्टेट क्राइम ब्रांच इस मामले में आगे की जांच करेगी।

बब्बर शेर साथियों पर गर्व है- राहुल गांधी

राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, शांतिपूर्ण विरोध हमारी ऐतिहासिक धरोहर है। यह हमारे खून में है और हर भारतीय का लोकतांत्रिक अधिकार है। मुझे युवा कांग्रेस के अपने बब्बर शेर साथियों पर गर्व है, जिन्होंने 'कम्प्रोमाइड

पीएम' (समझौता कर चुके प्रधानमंत्री) के खिलाफ निडर होकर देश के हित में आवाज उठाई है। अमेरिका के साथ हुए ट्रेड डील में देश के हितों से समझौता किया गया है। यह समझौता हमारे किसानों और टेक्सटाइल उद्योग को नुकसान पहुंचाएगा तथा हमारे डेटा को अमेरिका के हाथों में सौंप देगा। इस सचाई को देश के सामने रखने के लिए युवा कांग्रेस अध्यक्ष उदय भानु चिब और IYC के अन्य साथियों की गिरफ्तारी तानाशाही प्रवृत्ति और कायरता का प्रमाण है। कांग्रेस पार्टी और मैं अपने बब्बर शेर साथियों के साथ मजबूती से खड़े हैं। सत्ता को सच का आईना दिखाना अपराध नहीं, देशभक्ति है। डरो मत - सच और संविधान हमारे साथ हैं।

भाजपा के राहुल गांधी पर हमला

भाजपा नेता गौरव भाटिया ने कहा, राहुल गांधी ने भारत को शर्मिंदा करने के लिए यह साजिश रची थी। एआई समिट के दौरान यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं द्वारा शर्टलेस विरोध प्रदर्शन करने के लिए उदय भानु चिब को गिरफ्तार किया गया और दिल्ली पुलिस ने न्यायालय से उनकी सात दिन की रिमांड मांगी थी। न्यायालय ने उदय भानु चिब की चार दिन की पुलिस कस्टडी स्वीकार कर ली है। राहुल गांधी ने संविधान की प्रतिलिपि नहीं पढ़ी है। भारत के नेता प्रतिपक्ष भारत की सबसे कमजोर कड़ी हैं। भारत का हर नागरिक संविधान का पालन करता है क्योंकि यही सूत्र भारतीयों को एक दूसरे से बांधता है। उधर, नई दिल्ली जिले के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को बताया कि मामले में एक व्यापक साजिश के पहलू से जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार युवा कांग्रेस के कार्यकर्ता हॉल नंबर-5 के लॉबी क्षेत्र में शुक्रवार को घुस गए और अपनी कमीजों के नीचे पहनी हुई टी-शर्ट उतारकर या हाथों में पकड़कर नारे लगाने लगे। पुलिस सूत्रों के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने कार्यक्रम स्थल में प्रवेश करने के लिए क्यूआर कोड प्राप्त करने हेतु ऑनलाइन पंजीकरण कराया था। आरोपियों ने पहले काले रंग की छतरियों पर स्टिकर चिपकाकर उन्हें चुपके से भारत मंडपम में ले जाने की योजना बनाई थी। एक सूत्र ने बताया कि हालांकि, बाद में उन्हें लगा कि काले छाते प्रवेश द्वार पर तैनात सुरक्षाकर्मियों का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे, मगर उन्होंने अपनी योजना बदल दी और टी-शर्ट पर छपे स्टिकर लगवाकर उन्हें अपनी कमीज के नीचे पहन लिया।

टी-शर्ट पर ये लिखा था

अंदर प्रवेश करने के बाद उन्होंने नारे छपे टी-शर्ट के ऊपर पहनी हुई कमीजें उतार दीं। उनकी टी-शर्ट पर पीएम इज कॉम्प्रोमाइज्ड, भारत-अमेरिका व्यापार समझौता और एप्स्टीन फाइल्स लिखा था। सूत्रों ने दावा किया कि प्रदर्शनकारियों ने ड्यूटी पर तैनात कुछ पुलिस अधिकारियों के साथ मारपीट भी की और पूरे मामले की जांच की जा रही है। जांचकर्ता विरोध-प्रदर्शन के पीछे के वित्तीय लेन-देन की भी जांच कर रहे हैं।

टी-शर्ट बरामद की हैं

दिल्ली पुलिस ने आरोपी और यूथ कांग्रेस के नेता कृष्ण हरि की गाड़ी 22 फरवरी को टी-शर्ट बरामद की थीं।। कार से पीएम मोदी चेहरा छपी टी-शर्ट और पोस्टर भी मिले हैं। प्रदर्शन में इसमें 10 से यादा कार्यकर्ता हाथ में सफेद रंग की टी-शर्ट लिए हुए थे। टी-शर्ट पर पीएम मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की फोटो लगी है।

इन चार को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था

पुलिस ने चार आरोपियों बिहार से यूथ कांग्रेस के नेशनल सेक्रेटरी कृष्ण हरि, बिहार में यूथ स्टेट सेक्रेटरी कुंदन यादव, उत्तर प्रदेश में यूथ स्टेट प्रेसिडेंट अजय कुमार और तेलंगाना से नरसिम्हा यादव को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस का कहना है कि प्रदर्शनकारियों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया था।

कैंसर पीड़ित बेटी के इलाज के लिए आए विदेशी नागरिक के डॉलर चोरी, पिता ने नाबालिग बचों से कराई वारदात

नई दिल्ली । सेंट्रल जिले के थाना जामा मस्जिद पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए, उज्बेकिस्तान के एक नागरिक से 7200 अमेरिकी डॉलर की चोरी के मामले का खुलासा किया है। पुलिस ने इस गिरोह के मास्टरमाइंड पिता और उसके दो नाबालिग बच्चों को पकड़ा है। यह घटना तब हुई जब पीड़ित परिवार दिल्ली के जामा मस्जिद इलाके में घुमने आया था।

पीड़ित उज्बेकिस्तान का नागरिक है, जो अपनी नाबालिग बेटी के कैंसर के इलाज के लिए गुरुग्राम आया हुआ था। 15 जनवरी को वह अपने परिवार के साथ जामा मस्जिद मार्केट में घूम रहा था, तभी उसके बैग से 7200 अमेरिकी डॉलर (100-100 डॉलर के 72 नोट) चोरी हो गए। घटना के तुरंत बाद, पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए, पुलिस ने तुरंत जांच शुरू की और प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई की। पुलिस ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज और अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर जांच आगे बढ़ाई। इस जांच के दौरान न्यू सीलमपुर निवासी एक 15 वर्षीय लड़का और उसकी 13 वर्षीय बहन को संदिग्ध के रूप में चिन्हित किया गया। दोनों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई, जिसमें उन्होंने चौंकाने वाला खुलासा किया। पूछताछ में पता चला कि ये दोनों नाबालिग बच्चे अपने पिता के कहने पर चोरी की वारदातों को अंजाम देते थे। पुलिस के अनुसार, पिता ही इस पूरे गिरोह का सरगना था। वह बच्चों को आगे करके खुद को बचाने का प्रयास करता था और चोरी की गई रकम को अपने पास रखता था। मामले की गंभीरता को समझते हुए, पुलिस ने आरोपी पिता को भी गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी की गई रकम का एक बड़ा हिस्सा बरामद किया है।

गिरफ्तार पिता के पास से 2500 अमेरिकी डॉलर और शिकायतकर्ता का एटीएम कार्ड बरामद हुआ। इसके अलावा, तलाशी के दौरान, आरोपी के घर से 4000 अमेरिकी डॉलर भी मिले। चोरी की रकम से खरीदा गया 48 हजार रुपये का एक मोबाइल फोन और 4700 रुपये भारतीय मुद्रा भी जब्त की गई है।

जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी पिता का आपराधिक इतिहास रहा है। वह पहले भी लूट के एक मामले में संलिप्त पाया गया था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वह एक आदतन अपराधी है।

अनुराग ठाकुर का राहुल गांधी पर हमला- बोले- विदेशी ताकतों के इशारे पर चल रही कांग्रेस, देश से माफी मांगें

नई दिल्ली । भाजपा के लोकसभा सांसद अनुराग ठाकुर ने मंगलवार को विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी देश-विरोधी और विदेशी ताकतों के कहने पर काम कर रहे हैं। ठाकुर का यह बयान हाल ही में इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान हुए हंगामे के बाद आया है। मामले में कुछ दिन पहले नई दिल्ली के भारत मंडपम में इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट हो रहा था, जिसमें देश विदेश की कई बड़ी हस्तियों और नेताओं ने हिस्सा लिया था। वहां यूथ कांग्रेस के सदस्यों ने घुसकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने बेरोजगारी, महंगाई और भारत-अमेरिका व्यापार समझौते जैसे मुद्दों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार के खिलाफ नारे लगाए थे। इस प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया देते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि राहुल गांधी देश की छवि खराब कर रहे हैं। पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, राहुल गांधी देश-विरोधी ताकतों के प्रवक्ता बन गए हैं। वे भारत-विरोधी एजेंडा चलाते हैं और नकारात्मक राजनीति को बढ़ावा देते हैं। उनका एकमात्र काम झूठ बोलना, डर फैलाना, भारत को बदनाम करना और पीएम मोदी को गाली देना है। ठाकुर ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी भारत की आर्थिक उपलब्धियों को कम करके दिखाते हैं। उन्होंने कहा, जब भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से बढ़ रही है, तो वे इसे मरी हुई बताते हैं। एआई समिट की दुनिया भर में तारीफ हो रही है, लेकिन वहां बेशर्मी से प्रदर्शन किया गया और अभद्र व्यवहार दिखाया गया।

भाजपा नेता ने उठाया गंभीर सवाल

भाजपा नेता ने सवाल उठाया कि क्या राहुल गांधी की राजनीति विदेशों से प्रभावित हो रही है। उन्होंने पूछा, क्या कांग्रेस अब अंकल सैम और जॉर्ज सोरोस के इशारे पर चल रही है? क्या वे भारत के दुश्मन देशों का समर्थन कर रहे हैं?

उन्होंने राजीव गांधी फाउंडेशन का जिक्र करते हुए कहा कि कांग्रेस डोनेशन लेती है और फिर चीन की तारीफ करती है। ठाकुर ने तंज कसते हुए पूछा कि क्या राहुल लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं या भारत के ही विपक्ष के नेता हैं? अनुराग ठाकुर ने चार फरवरी को लोकसभा में हुई घटना की भी याद दिलाई। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सांसदों ने प्रधानमंत्री की सीट के पास जाकर सदन की कार्यवाही रोकी थी। उन्होंने पूछा, महिला सांसदों को संसद में भेजना और प्रधानमंत्री की सीट को घेरना; राहुल गांधी यह किस तरह की राजनीति करते हैं?

देश से मांगे माफी

ठाकुर ने कहा भाजपा, पीएम मोदी और अब भारत का विरोध यह राहुल गांधी का एजेंडा बन गया है। वह भारत की संवैधानिक संस्थाओं और नागरिकों से नफरत करने लगे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी का भारत-विरोधी प्रोपेगेंडा फेल हो गया है और आगे भी फेल होगा। अंत में उन्होंने मांग की कि राहुल गांधी को अपने व्यवहार के लिए देश से माफी मांगनी चाहिए। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने भी मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में मीडिया वार्ता कर कांग्रेस पर तीखा हमला किया। उन्होंने भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु चिब की गिरफ्तारी पर कहा कि राहुल गांधी ने भारत को शर्मिंदा करने के लिए यह पूरी साजिश रची थी।

कुछ लोगों के लिए राजाजी से ऊपर हैं लुटियंस- थरूर के बयान से बीजेपी के निशाने पर आई कांग्रेस

नई दिल्ली । कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने मंगलवार को राष्ट्रपति भवन के केंद्रीय प्रांगण में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजाजी के नाम से प्रसिद्ध) की प्रतिमा के अनावरण की जमकर प्रशंसा की। कुछ घंटों बाद भाजपा ने थरूर की इस प्रशंसा का इस्तेमाल उनकी पार्टी कांग्रेस पर निशाना साधने के लिए किया और दावा किया कि कांग्रेस इस कदम के खिलाफ थी। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला की एक्स पर पोस्ट में लिखा था, दुख की बात है कि कांग्रेस में कुछ लोग लुटियंस को राजाजी से ऊपर, विदेशी को स्वदेशी से ऊपर, औपनिवेशिक को भारतीय से ऊपर रखते हैं। पूनावाला थरूर की उस हालिया पोस्ट का जिक्र कर रहे थे, जिसमें उन्होंने राष्ट्रपति भवन में राजगोपालाचारी की प्रतिमा के अनावरण का स्वागत किया था। थरूर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वे राजगोपालाचारी की उदार आर्थिक नीतियों और मुक्त उद्यम के समर्थन

की प्रशंसा करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उनके मूल्य सांप्रदायिक कट्टरता से मुक्त थे। कांग्रेस सांसद थरूर की पोस्ट के एक हिस्से में लिखा था, यह दुखद है कि आज उनका अनुसरण करने वाले बहुत कम लोग बचे हैं। स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण सोमवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा राष्ट्रपति भवन में किया गया। इस प्रतिमा को ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस की प्रतिमा की जगह पर लगाया गया है। अपने पोस्ट में पूनावाला ने पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की नेता इल्तिजा मुफ्ती की ओर से इस कदम की आलोचना का भी हवाला दिया। पूनावाला ने कहा कि इस मामले पर अलग-अलग विचार दर्शाते हैं कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक लुटियंस मामले पर बंटी है। मुफ्ती ने एडविन लुटियंस के परपोते की एक पोस्ट पर प्रतिक्रिया दी थी, जिसमें उन्होंने प्रतिमा को हटाए जाने पर निराशा व्यक्त की थी। मैट रिडले ने लुटियंस की प्रतिमा के साथ अपनी एक पुरानी तस्वीर साझा करते हुए लिखा, यह जानकर दुख हुआ कि लुटियंस (मेरे परदादा) की प्रतिमा को दिल्ली स्थित उस राष्ट्रपति भवन से हटाया जा रहा है जिसे उन्होंने ही डिजाइन किया था। पिछले साल मैं इसके साथ था। इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए इल्तिजा मुफ्ती ने लुटियंस की प्रतिमा को हटाए जाने पर सवाल उठाया। उन्होंने भारत के औपनिवेशिक अतीत को मिटाने के जुनून की कड़ी आलोचना की। उन्होंने लिखा, अपने इतिहास के प्रति इस विकृत और बेबुनियाद गुस्से को जारी रखने से भारत को क्या लाभ होता है? औपनिवेशिक दाग को मिटाने का यह जुनून? लुटियंस की प्रतिमा ने ही दिल्ली को दिल्ली बनाया है। प्रतिमाओं और पट्टिकाओं को हटाकर आप विरासत या इतिहास को मिटा नहीं सकते। भारत की अधिकांश स्थापत्य कला की कृतियां ब्रिटिश और मुगल काल की हैं। इसमें बड़ी बात क्या है।

मयूर विहार इलाके के मॉल की पार्किंग में कार से मिला शव, मौत की गुत्थी सुलझाने में जुटी पुलिस

नई दिल्ली ।

दिल्ली के मयूर विहार इलाके में स्थित एक मॉल की पार्किंग में एक कार के अंदर एक व्यक्ति का शव मिलने से हड़कंप मच गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है और मौत के कारणों का पता लगाने की कोशिश कर रही है। जानकारी के मुताबिक, मयूर विहार स्थित स्टार सिटी मॉल की पार्किंग में खड़ी एक कार से शव मिला है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और कार से एक व्यक्ति का शव बरामद हुआ। दिल्ली पुलिस के अनुसार, पीड़ित की पहचान नोएडा के इलाहाबास निवासी नरेंद के रूप में हुई है। मौत का कारण नेचुरल लग रहा है। सीसीटीवी फुटेज से पता चलता है कि वह कार के अंदर बैठा था और शायद उसे हार्ट अटैक आया था। दिल्ली पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भिजवा दिया है। उसकी मौत दम घुटने से हुई है या उसे अटैक आया, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का सही कारण स्पष्ट हो पाएगा। पुलिस ने घटना स्थल को सील कर दिया है और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है ताकि घटना से जुड़े कोई सुराग मिल सकें। पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि क्या यह कोई सुनियोजित हत्या है या फिर कोई और कारण है। पुलिस के मुताबिक, 23 फरवरी को शाम करीब 5-55 बजे, पुलिस स्टेशन मयूर विहार में एक पीसीआर कॉल आई। इसमें बताया गया कि स्टार सिटी मॉल, मयूर विहार में खड़ी एक गाड़ी के अंदर एक व्यक्ति बेहोश पड़ा है। शुरुआती जांच में, शरीर पर कोई बाहरी चोट के निशान नहीं मिले। जांच के दौरान, मरने वाले के पास से अस्थमा से जुड़ी कुछ दवाएं मिलीं। पहली नजर में, यह मामला नेचुरल मौत का लग रहा है। पोस्टमार्टम के बाद ही मौत के सही कारण पता चलेंगे। मरने वाले के परिवार वालों को बता दिया गया है। कानून के मुताबिक आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

आस्था, राष्ट्रभाव और प्रकृति चेतना की काव्य-प्रतिध्वनि- स्मृति श्रीवास्तव का 'अन्तर्ध्वनि'

डायमंड पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित स्मृति श्रीवास्तव का तृतीय काव्य संग्रह अन्तर्ध्वनि समकालीन हिंदी काव्यधारा में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में उभरता है। हिंदी साहित्य में एम.ए. उपाधि प्राप्त करने के उपरांत लेखिका ने अपना जीवन हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के संवर्धन को समर्पित किया है। नई दिल्ली के सेंट थॉमस स्कूल में दो दशकों तक हिंदी एवं संस्कृत का अध्यापन, दिल्ली विश्वविद्यालय के नेत्रहीन विद्यार्थियों के लिए दुर्लभ ग्रंथों का वाचन-रिकॉर्डिंग तथा वंचित महिलाओं के लिए सामाजिक सक्रियता–इन सभी अनुभवों की गहन मानवीय संवेदना इस कृति की पंक्तियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। अन्तर्ध्वनि शीर्षक अपने आप में दार्शनिक गहराई लिए हुए है। ध्वनि केवल श्रव्य तरंग नहीं, बल्कि चेतना की कंपनशील ऊर्जा है; और जब वही ध्वनि अंतःकरण में प्रतिध्वनित होती है, तो वह अंतर्ध्वनि बन जाती है। संग्रह की भूमिका में व्यक्त विचार–सर्वे भवन्तु सुखिनः–पूरे काव्य-संसार को नैतिक और आध्यात्मिक आधार निर्मित करता है। यह कृति किसी एक भाव-क्षेत्र तक सीमित नहीं रहती, बल्कि भक्ति, प्रकृति, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक जागृति और अंतर्मन के सूक्ष्म द्वंद्व तक विस्तृत काव्य-परिसर रचती है। संग्रह का आरंभ गणेश वंदना से होता है और माँ सरस्वती, नमामि शंकर तथा दुर्गा स्तुति के माध्यम से भारतीय अध्यात्म की सांस्कृतिक निरंतरता को स्थापित करता है। जग में चहुँ दिश आनंद सरसे, सबके आँगन आशीष बरसे जैसी पंक्तियाँ कवयित्री के सार्वभौमिक मंगलकामना भाव को उद्घाटित करती हैं। यहाँ भक्ति पलायन नहीं, बल्कि सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है, जो व्यक्ति को करुणा और समभाव की ओर प्रेरित करती है। पर्व-पुष्पांजलि खंड भारतीय उत्सव-परंपरा का काव्यात्मक अभिलेख है। नूतन वर्ष से लेकर मकर संक्रांति, रक्षाबंधन, हरतालिका तीज और शिक्षक दिवस तक, प्रत्येक पर्व को केवल अनुष्ठान के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकात्मता के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है। मकर संक्रांति पर सूर्य को काव्य-अर्घ्य देते हुए कवयित्री भारतीय लोक-संस्कृति की विविधता में निहित एकता को रेखांकित करती हैं–पोंगल, बिहू, लोहड़ी जैसे विभिन्न नामों के बावजूद अंतर्ध्वनि एक ही है सौहार्द और समरसता। मातृभूमि के गौरव खंड राष्ट्रभाव की ओजस्वी अभिव्यक्ति है। स्वतंत्रता के प्रहरियों और शहीदों की शौर्यगाथाएँ केवल ऐतिहासिक स्मरण नहीं, बल्कि नैतिक प्रेरणा का स्रोत हैं। कवयित्री भारतभूमि को ऋणस्वरूप स्वीकार करती हैं और संस्कृति के स्वर्णिम स्वर, सद्भाव तथा विश्वबंधुत्व की भावना को समकालीन परिप्रेक्ष्य में पुनर्स्थापित करती हैं। यहाँ राष्ट्रप्रेम उग्रता नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और कृतज्ञता का भाव है। प्रकृति-केंद्रित खंड हरित धरा का आह्वान संग्रह की विशिष्ट उपलब्धि है। पृथ्वी को सांस लेने दो और पर्वत पुकार रहे हैं जैसी कविताएँ पर्यावरणीय संकट पर संवेदनशील हस्तक्षेप हैं। कवयित्री धरती को एक नारी-रूपक में देखती हैं, जो अति-दोहन से व्यथित है। प्रकृति का यह मानवीकरण केवल अलंकारिक युक्ति नहीं, बल्कि पारिस्थितिक चेतना का काव्यात्मक प्रतिरोध है। गिरती पत्तियों की लय, रिमझिम बूंदों की मधुरिमा, शरद का आगमन और सितारों की रागिनी–इन सबके माध्यम से प्रकृति एक जीवंत संवादिनी बन जाती है। जागृति के स्वर खंड में कवयित्री समकालीन सामाजिक यथार्थ से मुठभेड़ करती हैं। लाइक और कमेंट की दुनिया डिजिटल युग की आभासी संवेदनाओं पर सूक्ष्म व्यंग्य है, तो रिवाज़ और परंपराएँ तथा पारंपरिक बनाम समकालीन बदलते सामाजिक मूल्यों पर विमर्श प्रस्तुत करती हैं। बेटियाँ और शक्ति स्वरूपा स्त्री-सशक्तिकरण की सशक्त अभिव्यक्ति हैं, जहाँ नारी को करुणा और सामर्थ्य–दोनों का संगम माना गया है। बुजुर्गों की सीख, रिश्तों की जटिलता और सहानुभूति बनाम युद्ध जैसे विषयों के माध्यम से संग्रह सामाजिक नैतिकता की पुनर्समीक्षा करता है। अंतिम खंड अंतर्मन के दीप संग्रह की भाव-गहराई का चरम है। यहाँ कविताएँ आत्मसंवाद बन जाती हैं–अनकही प्रीति, मौन दस्तक, अंतर्मन का द्वंद्व और आत्म संतुष्टि जैसे शीर्षक मनुष्य की भीतरी परतों को उद्घाटित करते हैं। जीवन की एकरसता, सपनों का संबल, स्मृतियों की ऊष्मा और समर्पण की निस्तब्धता–इन सबके बीच कवयित्री एक संतुलित जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करती हैं। भाषा सरल है, पर भाव-संरचना गहरी और बहुस्तरीय। संपूर्ण संग्रह का काव्य-शिल्प सहजता और संप्रेषणीयता पर आधारित है। अलंकारों का संयमित प्रयोग, लयात्मक प्रवाह और भावात्मक प्रामाणिकता इसे पाठक के निकट ले आते हैं। स्मृति श्रीवास्तव की कविताएँ दुरूह बिंब-भाषा का आश्रय नहीं लेतीं; वे सीधे हृदय से संवाद करती हैं। यही कारण है कि उनका काव्य बौद्धिक विश्लेषण के साथ-साथ भावनात्मक स्पर्श भी प्रदान करता है। अन्तर्ध्वनि केवल कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि आत्मा और समाज के बीच सतत संवाद का सेतु है। यह कृति बताती है कि आध्यात्मिकता, राष्ट्रभाव, प्रकृति-प्रेम और सामाजिक चेतना परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक ही व्यापक मानवीय संवेदना के विविध आयाम हैं। स्मृति श्रीवास्तव की लेखनी पाठक को बाह्य कोलाहल से भीतर की शांति की ओर ले जाती है, जहाँ अंतःचेतना की सूक्ष्म ध्वनि सुनाई देती है। यह कृति समकालीन हिंदी साहित्य में एक सार्थक और मूल्यपरक योगदान के रूप में रेखांकित की जा सकती है। अन्तर्ध्वनि न केवल पाठकीय संवेदना को जाग्रत करती है, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक आत्मावलोकन की प्रेरणा भी देती है। यह संग्रह इस विश्वास को पुष्ट करता है कि जब कविता अंतर्मन से उपजती है, तो उसकी ध्वनि समय की सीमाओं को पार कर स्थायी प्रभाव छोड़ती है।

वाणिय समझौते पर पुनर्दृष्टि

अमेरिका से हुए व्यापार समझौते के मोटे प्रारूप (फ्रेमवर्क) के कानूनी ब्यौरे को अन्तिम स्वरूप देने वाली वार्ता को भारत ने फिलहाल आगे के लिए टाल दिया है। यह वार्ता वाशिंगटन में सोमवार से होने वाली थी। जाहिर है कि भारत की मोदी सरकार चाहती है कि दोनों देशों के बीच आपसी कारोबार की शर्तें अब अमेरिका के सुप्रीम या सर्वोच्च न्यायालय द्वारा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की एकतरफा घोषित शुल्क के विरुद्ध दिये गये फैसले की रोशनी में तय होनी चाहिए। अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय ने दो दिन पहले ही साफ कर दिया था कि ट्रम्प ने संविधान के जिस 'इंटरनेशनल इमरजेंसी इकोनामिक पावर्स एक्ट' के तहत दुनिया के विभिन्न देशों के आयातित माल पर मनमाफिक शुल्क दरें निर्धारित की हैं वे अवैध है और राष्ट्रपति के अधिकार क्षेत्र से बाहर है क्योंकि ऐसा करने के लिए उन्होंने अमेरिकी संसद (कांग्रेस) की स्वीकृति नहीं ली है। इस फैसले के तुरन्त बाद ट्रम्प ने अमेरिका के संविधान के एक अन्य अनुछेद का प्रयोग करते हुए 150 दिन या पांच महीने के लिए अमेरिका में आने वाले समस्त आयातित माल पर पहले 10 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा की और बाद में उसे बढ़ा कर 15 प्रतिशत कर दिया। भारत के साथ बनी व्यापार सहमति के अन्तर्गत यह शुल्क दर 18 प्रतिशत रखी गई थी अतः अब भारत से निर्यातित माल पर यही दर लगेगी। मगर सबसे बड़ा सवाल यह है कि भारत व अमेरिका के बीच जिस कारोबार फ्रेमवर्क की घोषणा पिछले दिनों हुई थी उसकी सर्वोच्च न्यायालय के फैसले की रोशनी में अब स्थिति क्या होगी? इस बारे में देश के कुछ विशिष्ट आर्थिक पंडितों की राय है कि वह फ्रेमवर्क या व्यापार प्रारूप अब केवल 'उद्देश्यात्मक या इच्छा शक्ति का वक्तव्य' बन कर रह जायेगा। इस फ्रेमवर्क के घोषणा पत्र पर दोनों ही देशों के कार्यकारी राज प्रमुखों ने हस्ताक्षर किये थे। वैश्विक गतिविधियों से जाहिर है कि जब से अमेरिका में जनवरी 2024 से राष्ट्रपति के पद पर डोनाल्ड ट्रम्प बैठे हैं तब से पूरी दुनिया की राजनीति में भारी उथल-पुथल चल रही है। विगत 2025 वर्ष के दौरान ट्रम्प की नीतियों की वजह से पूरे विश्व में 'आर्थिक समर' का ऐसा दौर शुरू हुआ है कि इसने दुनिया के सभी देशों में अपने-अपने आर्थिक हित संरक्षण का अभियान चला दिया है। निश्चित रूप से इसे 'आर्थिक कोल्ड वार' का नाम दिया जा सकता है। मगर सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि ट्रम्प की नीतियों की वजह से इस कोल्ड वार के चलते विश्व का शक्ति क्रम गड़बड़ा गया है और विश्व व्यापार संगठन पूरी तरह से अप्रासंगिक हो गया है। ट्रम्प ने द्विपक्षीय आधार पर जिस तरह दुनिया के बीस से अधिक आर्थिक क्षमता वाले देशों के साथ व्यापार समझौते किये उससे विश्व व्यापार संगठन में विकसित देशों व विकासशील देशों के बीच जो न्यायप्रिय व्यापारिक सन्तुलन बना था वह पूरी तरह क्षत- विक्षत हो चुका है अतः ऐसे वातावरण में अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय का अमेरिका की एकतरफा शुल्क नीति के खिलाफ आया फैसला विकासशील देशों के लिए 'रामबाण' की तरह है। भारत बेशक फिलहाल दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है मगर यह एक विकासशील देश ही है क्योंकि इसके 80 प्रतिशत से ज्यादा नागरिकों की हैसियत अभी भी विकसित देशों के नागरिकों के मुकाबले बहुत कमजोर है। अतः भारत को यह सोचना होगा कि वह फैसले के बाद बने नये वातावरण का अधिकतम लाभ अपने हित में किस प्रकार उठाये? इस सन्दर्भ में भारत ने कुछ दिनों पहले ही जो व्यापार समझौता यूरोपीय संघ के 27 देशों के साथ किया है वह नजीर बन सकता है। इस समझौते में भारत ने यूरोपीय देशों को निर्यात होने वाले उस भारतीय माल पर जीरो प्रतिशत शुल्क की छूट ली है जिसके उत्पादन करने में भारत में श्रमिक बल व हुनर की आवश्यकता पड़ती है। अतः अमेरिका के साथ भी व्यापार शर्तें निर्धारित करते हुए भारत अपने श्रममूलक उद्योगों का संरक्षण करने की कोशिश कर सकता है। यूरोपीय संघ के साथ हुए समझौते में भारत ने अपने कृषि क्षेत्र को भी पूरी तरह संरक्षित किया है। इसके साथ ही भारत की कोशिश हो सकती है कि वह अमेरिका से आने वाले अर्थात आयातित माल पर शुल्क दरें इस प्रकार लगाये कि भारत में ऐसे क्षेत्रों में स्थापित उत्पादन इकाइयों की उत्पादकता पर प्रभाव न पड़े। लेकिन इसके साथ-साथ भारत को अपने लोगों की क्रय क्षमता को भी ध्यान रखना होगा और उपभोक्ताओं को राहत भी देनी होगी अतःवह अमेरिकी आयातित माल पर अर्ध विराम नहीं लगा सकता है। विशेषकर उच्च टैक्नोलोजी व रक्षा टैक्नोलोजी के क्षेत्र में इसे अमेरिका को उचित स्थान देना ही होगा। हमें यह भी समझना होगा कि जब किन्हीं दो देशों के बीच व्यापार समझौते होते हैं तो उनका असर वैश्विक रणनीतिक मामलों पर भी पड़ता है अतः रूस के साथ भारत के जो ऐतिहासिक मधुर सम्बन्ध हैं वे किसी भी तरह से प्रभावित न हों । मगर अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिये गये फैसले का दूसरा असर यह भी हो सकता है कि दुनिया में बहुध्रुवीय शक्ति सन्तुलन की धारा बहने लगे क्योंकि अभी तक विश्व के विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों पर अमेरिका व यूरोपीय देशों का ही दबदबा रहा है जबकि ब्रिक्स (ब्राजील-रूस- भारत-चीन व दक्षिण अफ्रीका) जैसा संगठन बनने के बाद वैश्विक स्तर पर कारोबारी समीकरण बदलने की दिशा में चलने लगे थे। मगर श्री ट्रम्प ने अपनी शुल्क नीति के जरिये पूरे व्यापारिक सन्तुलन को केवल अमेरिका के ही पक्ष में झुकाने का तरीका ढूंढने का प्रयास किया। यही वजह रही कि पूरी दुनिया के देश उनकी इस नीति को विश्व के समरूपी विकास के सिद्धान्त के विरुद्ध मानने लगे थे और चिन्तित थे क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बने संयुक्त राष्ट्रसंघ का यही उद्देश्य था।

सम्पादकीय...

नखरे न दिखाएं

भारतीय संस्कृति में अतिथि देवो भवः केवल एक कहावत नहीं, बल्कि जीवन-मूल्य है। हमारे यहाँ अतिथि का आगमन शुभ माना जाता है। घर की रसोई में हलचल बढ़ जाती है, बैठक सजी-धजी लगने लगती है और मन में एक सहज उत्साह जाग उठता है कि आने वाला व्यक्ति अपनेपन और आदर का अनुभव करे। परंतु विडंबना यह है कि कभी-कभी कुछ अतिथि अनजाने में ही इस आत्मीयता पर पानी फेर देते हैं सिर्फ इस कारण कि वे चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक या परोसे गए नाश्ते को लेकर नखरे दिखाने लगते हैं। आज के बदलते समय में खान-पान की पसंद-नापसंद स्वाभाविक है। किसी को चाय नहीं पसंद, किसी को कॉफी नहीं जंचती, कोई कोल्ड ड्रिंक से परहेज करता है। परंतु समस्या तब खड़ी होती है जब इन बातों को ऐसे ढंग से कहा जाए कि मेजबान असहज हो जाए। मैं तो चाय नहीं पीता, कॉफी से मुझे एलर्जी है, कोल्ड ड्रिंक बिल्कुल नहीं, ये बिस्कुट नहीं खाता, तेल ज्यादा है ऐसी टिप्पणियाँ यदि संवेदनशीलता के बिना कही जाएँ तो मेजबान की भावना आहत हो सकती है। जब कोई व्यक्ति अपने घर पर किसी को आमंत्रित करता है, तो वह केवल चाय या नाश्ता नहीं परोसता वह अपनी भावनाएँ, अपना समय और अपनी श्रद्धा परोसता है। वह सोचता है कि अतिथि को क्या अच्छा लगेगा, घर में क्या उपलब्ध है, कैसे स्वागत किया जाए। ऐसे में यदि अतिथि हर वस्तु में कमी निकालने लगे या बार-बार मना करता रहे, तो मेजबान के लिए स्थिति दुविधापूर्ण हो जाती है। सोचिए, यदि आप किसी के घर जाएँ और मेजबान बार-बार पूछे–तो फिर आप क्या लेंगे?–और हर उत्तर में 'न' ही मिले, तो अंततः वह क्या परोसे? उसकी आतिथ्य-भावना कहाँ व्यक्त हो? अतिथि के रूप में हमारा दायित्व भी कम नहीं है। यदि हमें किसी चीज़ से चिकित्सकीय कारणों से परहेज है, तो विनम्रता से पहले ही सूचित कर देना उचित है। परंतु सामान्य परिस्थितियों में जो भी स्नेहपूर्वक परोसा जाए, उसका थोड़ा-सा स्वाद लेकर धन्यवाद कहना ही शिष्टाचार है। सच तो यह है कि अतिथि का उद्देश्य भोजन नहीं, संबंधों की ऊष्मा होना चाहिए। यदि हम केवल स्वाद और पसंद के आधार पर प्रतिक्रिया देंगे, तो संबंधों की मिठास फीकी पड़ सकती है। जीवन में हर बात स्वीकार करना आवश्यक नहीं, परंतु उसे कहने का तरीका बहुत महत्वपूर्ण है। यदि सचमुच चाय नहीं पीते, तो मुस्कुराकर कहा जा सकता है यदि संभव हो तो मुझे सादा पानी ही दे दीजिए। या थोड़ी-सी चाय ले लूंगा। इससे मेजबान को यह अनुभव होता है कि आपने उसकी भावना का सम्मान किया। कटु या उपेक्षापूर्ण ढंग से इनकार करना सामाजिक शिष्टाचार के विपरीत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि हम किसी होटल या रेस्तरां में नहीं, किसी के घर में बैठे हैं जहाँ औपचारिकता से अधिक आत्मीयता होती है। हम अक्सर भूल जाते हैं कि किसी के घर जाकर हम उसके संसाधनों का नहीं, उसके मन का आदर करते हैं। अतिथि का सौम्य व्यवहार ही मेजबान के लिए सबसे बड़ा उपहार होता है। यदि हम हर चीज़ में चयन और आलोचना की दृष्टि रखेंगे, तो धीरे-धीरे लोग बुलाने से कतराने लगेंगे। संबंधों की डोर बहुत कोमल होती है। एक छोटी-सी टिप्पणी भी उसमें गांठ डाल सकती है।

अमित शाह का अब नशे पर करारा प्रहार

अभी हाल ही में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात हुई। मैंने उनसे कहा कि आपने एक निश्चित अवधि में नक्सलवाद को खात्मे की कगार पर पहुंचा कर नजीर पेश की है कि नेतृत्वकर्ता में दम हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। अब आपसे गुजारिश है कि देश को नशे के सौदागरों से मुक्ति दिलाइए। ड्रग्स कार्टेल का खात्मा करिए। यह आसान काम नहीं है लेकिन आप में यह करिश्मा करने का दम है। उन्होंने अपनी खुशनुमा मुस्कान के साथ बस इतना कहा कि देखते जाइए, ड्रग्स कार्टेल की अब बिल्कुल ही खैर नहीं। इस देश में उनके लिए कोई जगह नहीं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को लेकर वैसे तो हमेशा ही विश्वास का भाव रहा है लेकिन जिस तरह से उन्होंने नक्सलवाद को खात्मे की कगार पर पहुंचा दिया है, उसने उनकी दृढ़ता, साहस और लक्ष्य के प्रति एकाग्रता का सबको मुरीद बना दिया है। उन्होंने मार्च 2026 तक नक्सलियों के खात्मे की घोषणा की थी तो सबको शंका थी कि 55 साल से भी ज्यादा पुराना यह रक्तरंजित रोग, जिसने न जाने कितने नेताओं, पुलिस अधिकारियों और प्रभावशाली नेताओं की जान ली, क्या वाकई इतनी जल्दी खत्म होना संभव है? मगर अमित शाह दृढ़ थे कि खात्मा तय कर लिया है तो फिर लक्ष्य पूरा होगा। दरअसल उन्होंने जब घोषणा की थी उसके काफी पहले से संबंधित राज्यों के साथ व्यूह रचना की जा रही थी। तैयारी फूलप्रूफ थी, लक्ष्य स्पष्ट था, योग्य अधिकारियों को तैनात किया जा चुका था, संसाधनों में कोई कमी नहीं रखी गई, भूले-भटकों के लिए एक हाथ में स्नेह भरा स्पर्श था तो कट्टरता दिखाने वालों के लिए आग उगलती बंदूकें थीं। सफल नेतृत्वकर्ता का यही अंदाज होता है। निश्चित रूप से अब बारी ड्रग्स के सौदागरों की है और केंद्रीय स्तर पर सघन व्यूह रचना के साथ काम चल भी रहा है। आम धारणा यही है कि अमित शाह घोषणा से ज्यादा परिणामों में विश्वास करने वाले नेता हैं। जब थोड़ी सी जानकारी सामने आती है तो ढेर सारा काम हो चुका होता है। अभी मैं गोवा में था। वहां के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और फिर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और दोनों राज्यों के आला पुलिस अधिकारियों से मैं बात कर रहा था तो पता चला कि ड्रग्स कार्टेल के खिलाफ कितनी सघन तैयारी चल रही है। शायद कम ही लोगों को पता होगा कि केंद्र सरकार ने 15 अगस्त 2020 को नशामुक्त भारत अभियान की घोषणा की थी। ऐसा नहीं कि अचानक घोषणा कर दी गई हो। उसके पहले 2018 में एक सर्वेक्षण किया गया जिसकी रिपोर्ट 2019 में आई। निष्कर्ष चौंकाने वाले थे। पता चला कि 16 करोड़ लोग शराब का सेवन करते हैं जिनमें से 5.7 करोड़ से ज्यादा लोग गंभीर स्थिति में हैं। दूसरे स्थान पर भांग है जिसका सेवन करीब 3.1 करोड़ लोग करते हैं। करीब 25 लाख लोग गंभीर लत से पीड़ित हैं। लगभग 2.26 करोड़ लोग अफीम खाते हैं जिनमें 77 लाख लोग गंभीर हालत में हैं। करीब 8.5 लाख लोग नसों में इंजेक्शन के माध्यम से नशीली दवाएं लेते हैं। उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, आंध्रप्रदेश और तेलंगाना जैसे राज्यों में ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा है। इतना ही नहीं सूंघ कर नशा करने वालों की संख्या भी काफी है। इस रिपोर्ट के आधार पर ही योजना बनी और नशे के सौदागरों की नकेल कसने का काम प्रारंभ हुआ। आपको याद होगा कि पिछले साल सितंबर में राष्ट्रीय नारकोटिक्स टास्क फोर्स के दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बड़ा स्पष्ट ब्यौरा दिया था। उन्होंने टास्क फोर्स से कहा था कि भारत में ड्रग्स कार्टेल के तीन चरण हैं। पहला जो विदेश में बैठा है और सीमा से ड्रग्स अंदर भेजता है। दूसरा जो देश के भीतर है और विभिन्न राज्यों तक ड्रग्स पहुंचाता है और तीसरा जो स्थानीय स्तर पर ड्रग्स की पुड़िया चौक-चौराहों तक पहुंचाता है। तीनों कार्टेल पर एक साथ पूरी शक्ति के साथ आघात करने की जरूरत है और यह आघात पूरी शक्ति के साथ चल रहा है। हमारी खुफिया एजेंसियां बेहतरीन काम कर रही हैं। आप जानकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि भारत की जेलों में करीब 16 हजार ड्रग्स तस्कर बंद हैं। ये तस्कर बांग्लादेश, फिलीपींस, घाना, म्यांमार, मलेशिया और नाइजीरिया जैसे देशों से हैं। इन्हें डिपोर्ट करने का काम प्रारंभ हो चुका है, जो ड्रग्स तस्कर विदेशों में बैठे हैं, उनके प्रत्यर्पण की प्रक्रिया भी चल रही है। मगर सबसे बड़ा अभियान तो इस बात को लेकर चल रहा है कि बॉर्डर से ड्रग्स की तस्करी भारत में हो ही नहीं पाए। निश्चित रूप से यह आसान काम नहीं है क्योंकि ड्रग्स कार्टेल का नेटवर्क बड़ा पुख्ता है। ड्रग्स के धंधे में अथाह पैसा है जिसका उपयोग प्रलोभन से लेकर धमकी देने या जान लेने तक में किया जाता है। पंजाब और राजस्थान बॉर्डर से लेकर गुजरात में समुद्री सीमा तक ड्रग्स तस्करों की मदद पाकिस्तानी आर्मी और उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई कर रही है। ड्रग्स भेजने के लिए तस्करों को ड्रोन भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। दूसरा बड़ा रास्ता है गुजरात का समुद्र तट। खासकर हेरोइन नाम का नशा कंटेनर में छुपा कर तस्करी करने के कई प्रकरण सामने आ चुके हैं। पांच साल पहले गुजरात के मुंद्रा पोर्ट पर ऐसे ही एक कंटेनर में छिपा कर लाई गई 21 हजार करोड़ की हेरोइन पकड़ी गई थी। इसके अलावा बिहार और उत्तर प्रदेश में नेपाल के रास्ते तो पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में म्यांमार और बांग्लादेश के रास्ते ड्रग्स की तस्करी हो रही है और ये सारे ड्रग्स तस्कर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। मैक्सिको, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, थाईलैंड, फिलीपींस, नेपाल, म्यांमार से लेकर नाइजीरिया और घाना तक के ड्रग्स कार्टेल एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं, वे एक-दूसरे के नेटवर्क का उपयोग भी करते हैं।

ऐसी स्थिति में लड़ाई निश्चय ही बहुत बड़ी है। मगर नरेंद्र मोदी का नेतृत्व और अमित शाह की दृढ़ता पर भरोसा किया जाना चाहिए कि जिस तरह भारत ने नक्सलवाद के खिलाफ जंग जीती है। ड्रग्स कार्टेल को भी नेस्तनाबूद करने में हम सफल होंगे। अमित शाह जी, देश आपके साथ है। एक बात और कहना चाहता हूं कि ड्रग्स के खिलाफ इस लड़ाई में सबसे बड़ी भूमिका हमारे युवा, हमारे शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता निभा सकते हैं।

कार्रवाई तो पुलिस करेगी लेकिन ये सभी लोग खुफिया सूचना के सूत्र तो बन ही सकते हैं। यह मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि ड्रग्स के सौदागरों का जाल गांव-गांव तक फैला है और हमारे युवाओं को ही वो शिकार बना रहे हैं।

व्याख्यान- किसान आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान

चिंताहरण सोशल डेवलपमेंट ट्रस्ट की ओर से चिंताहरण स्मृति व्याख्यान का आयोजन पटना के बहुउद्देशीय सांस्कृतिक परिसर (भारतीय नृत्य कला मंदिर) में किया गया। व्याख्यान का विषय था स्वामी सहजानंद सरस्वती के किसान आंदोलन में हिंदी के साहित्यकारों की भूमिका। इस मौके पर पटना के साहित्य व सांस्कृतिक जगत के अलावा समाज के विभिन्न तबकों व जनसंगठनों के प्रतिनिधि और लोग मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन युवा संस्कृतिकर्मी जयप्रकाश ने किया। स्वागत वक्तव्य देते हुए श्री सीताराम आश्रम ट्रस्ट के सचिव डॉ सत्यजीत सिंह ने कहा आज स्वामी सहजानंद सरस्वती का असली जन्मदिन है। स्वामी सहजानंद सरस्वती ऐसे महान किसान नेता थे जिन्होंने सिर्फ अपनी मुक्ति की बात नहीं की बल्कि समाज को कैसे मुक्ति दिलाए जाए इसके बारे में सोचा। स्वामी जी ने संन्यास से समाजवाद की यात्रा रही है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य रहे चिंताहरण डॉ. (कर्नल) ए.के.सिंह ने अपने संबोधन के दौरान बताया मेरे बाबा ने बहुत ज्यादा उम्र में विवाह किया। जब मेरे पिता का जन्म हुआ तो उसका नाम हुआ चिंताहरण सिंह मतलब चिंता का हरण करने वाला। इस तरह सेवा करना मेरे परिवार का संस्कार रहा है। मैं बंबई छोड़ कर पटना आया। इंग्लैंड से अपने भाई सत्यजीत को प्रेरित कर पटना लाया। अपने बेटे को भी बंबई से पटना लाए। मैंने डॉक्टर होकर हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन में काम किया। काम को छोड़ कर किसी भौतिक सुख के पीछे नहीं भागा। वेस्लेयन यूनिवर्सिटी में भारतीय इतिहास के प्रोफेसर विलियम आर.पिंच ने अपने संबोधन में कहा स्वामी सहजानंद सरस्वती पर सबसे महत्वपूर्ण काम मेरे गुरु वाल्टर हाउज़र का था। मैंने साहित्यकारों की भूमिका के बदले योगदान पर ज्यादा ध्यान दिया। सबसे पहले वाल्टर हाउज़र ने स्वामी सहजानंद सरस्वती से जुड़े दस्तावेजों को पचास के दशक में खोजा। फिर कुछ दस्तावेजों को अमेरिका ले गए लेकिन फिर अब पटना लौटकर आ गया। जब मैं वाल्टर हाउज़र का छात्र था तब उन दस्तावेजों को अमेरिका में ही देखने का मौका नहीं मिला था। लेकिन अब जब पटना आया हूं, छुट्टी लेकर तब देखने का मौका मिला है। इन सामग्रियों से गुजरते हुए मोहित हूं। बहुत दिलचस्प और काम की सामग्री है। आप में से कई लोग चंपारण में एक जमाने के साहित्यकार रहे धनराज पुरी का नाम जानते होंगे, जिनकी किसान आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। अब सवाल यह है कि किसे हम साहित्यकार या लेखक मानेंगे। स्वामी सहजानंद सरस्वती खुद लेखक थे। बी.बी मिश्रा एक महत्वपूर्ण लेखक थे जो स्वामी जी की गतिविधियों की प्रेस रिलीज लिखा करते थे। सारण और चंपारण जिले में राहुल सांकृत्यायन और नागार्जुन किसान आंदोलन में सीधे सीधे प्रत्यक्ष भागीदार थे। भारतीय इतिहास के प्रोफेसर विलियम आर पिंच, जो विजय पिंच के नाम से भी जाने जाते हैं, ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा सबसे बड़ा सवाल यह है कि वह ऐसा क्या था जिसने नागार्जुन और राहुल जी को किसान आंदोलन में सीधे भाग लेने के लिए प्रेरित किया? अमवारी में राहुल और नागार्जुन गिरफ्तार हुए थे इन बातों से हम सभी वाकिफ हैं। स्वामी जी के संस्मरणों से किसान आंदोलन का पता उनकी मृत्यु के बाद 1952 में प्रकाशित हुआ। उन संस्मरणों से बहुत कुछ पता चलता है। यह भी अजीब बात है कि स्वामी सहजानंद सरस्वती ने अपनी सभी किताबें 1941, 42 में लिख ली गई थी पर उनके जीवन काल में क्यों नहीं छपी थी? उनकी मौत के कई दशकों बाद छपी। जैसा कि हमलोग जानते हैं कि 1939 तक आते-आते वे वामपंथ की ओर आकृष्ट होने लगे थे। 1939 के अक्टूबर में कार्यानन्द शर्मा के किसान आंदोलन के किए हुए आधार पर कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। इस स्थापना में बी.बी मिश्रा भी शामिल थे जिनका नाम आप सबों को जानना चाहिए। बी. बी मिश्रा बाद में बिहार के कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से थे। स्वतंत्र भारत में बिहार अभिलेखागार के निर्देशक रहे। जब 1941 में हिटलर ने सोवियत संघ पर हमला किया तब कम्युनिस्ट पार्टी ने पीपुल्स वार की लाइन ली। जब स्वामी जी जेल में रहे तब उन्हें बहुत कुछ लिखने का मौका मिला। जेल में स्वामी जी के साथ बीसवीं सदी के सबसे बेहतरीन दिमागों में से एक राहुल सांकृत्यायन भी थे। जेल में ही स्वामी जी और राहुल जी दोनों अपनी आत्मकथा लिख रहे थे। स्वामी जी ने तिब्बत के बाद राजनीति से जुड़ने की कथा लिखी है। खेतमजदूर, झारखंड के किसान आदि जैसी किताबें लिखीं । यहीं उन्होंने गीता हृदय का पहला ड्राफ्ट लिखा जो गीता की मार्क्सवादी व्याख्या के रूप में देखी जाती है विलियम पिंच ने अमवारी में राहुल सांकृत्यायन पर हमले और गिरफ्तारी के बारे में बताया इस बात पर बहुत बहस हुई कि क्या पहले गिरफ्तारी हुई और तब हमला किया ? यानी क्या पुलिस के संरक्षण में ऊपर जमींदार के हाथी पर सवार उसके महावत द्वारा ? बी.बी मिश्रा ने राहुल जी जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वान के साथ जो गलत व्यवहार किया गया इस बारे में लिखा। इसकी चर्चा दुनिया भर के अखबारों में हुई। नागार्जुन ने 1943 में स्वामी सहजानंद सरस्वती को लिखे अपने पत्र में लिखा है कि आप मेरे राजनीतिक गुरु थे । राहुल उनके आध्यात्मिक गुरु के समान थे। श्रीलंका जाकर बौद्ध धर्म का अध्ययन करने की प्रेरणा उन्हें राहुल से ही मिली। नागार्जुन पता नहीं क्यों अपनी जीवनी के बारे में बात करने से बचते रहे हैं। नागार्जुन ने अपनी आत्मकथा क्यों नहीं लिखी ? पूछने पर कहा कहा करते थे कि मेरा काव्य पढ़ो। नागार्जुन पर उनके पुत्र शोभाकांत और तारानंद वियोगी ने जीवनी लिखी है। 1938 के समय स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स के पहले बिहार व यूपी की सीमा पर बेलहवा गए वहां के महंत से मिलने। महंत ने नागार्जुन को लाठी से पीटने का आदेश दिया। नागार्जुन किसी तरह कुछ साधुओं की मदद से वहां से भागे। यह 1938 के अक्टूबर की बात है। गोरखपुर के अपने परिचितों से जाकर मदद मांगी। बाद में इस महंत के बारे में पता चला कि वह बच्चों की बलि देता है, स्त्रियों के साथ व्यभिचार करता है।

अंत में वह महंत जेल जाता है। नागार्जुन ने भगत सिंह के साथी रहे केदारमणि शुक्ल के साथ कम्युनिस्ट पार्टी के युवाओं का ट्रेनिंग स्कूल खोला। सारण और चंपारण में चूंकि कांग्रेस मजबूत थी इस कारण किसान सभा को वहां घुसने में काफी परेशानी थी। यहां 1938 में किसान सभा में बहुत विवाद था। कांग्रेस और किसान सभा में विवाद की वजह कांग्रेस पर जमींदारों का प्रभाव था। वैसे विवाद के ओर नागार्जुन थे तो दूसरी ओर महंत धनराज पुरी थी। विवाद की वजह 1937 का चुनाव था। विवाद के कारण स्वामी जी ने कार्यानंद शर्मा को मुंगेर से भेजा। कार्यानंद शर्मा ने वहां से नागार्जुन को हटाकर कहीं और भेजने की बात की थी। स्वामी जी ने बेलवा की जांच के लिए यात्रा की थी। नागार्जुन ने राहुल जी की तरह पुरानी पांडुलिपियों आदि में अपना ध्यान नहीं लगाया। वे आंदोलन के लिए जमीन तलाश करने की कोशिश करते रहे। पटना कॉलेज के पूर्व प्राचार्य व हिंदी के आलोचक प्रो तरुण कुमार ने अपने संबोधन में प्रेमचंद, निराला, मैथिली शरण गुप्त का उदाहरण देते हुए कहा विलियम आर पिंच ने वह काम किया जो हमलोगों को करना चाहिए था। विषय के कितने आयाम हो सकते हैं इसकी ओर इशारा किया गया। राहुल जी ने जो काम किया उसके उसके लिए कई जन्म लेना पड़ता है। भारत में आश्रमों के साथ - साथ कोठे की भी बड़ी भूमिका रही है। भारत में विद्रोही साधु, संतों आदि की बड़ी प्रमुख भूमिका रही है। किसान आंदोलन का मतलब है ग्रामीण भारत के बात करना। शिवपूजन सहाय ने देहाती दुनिया जैसा उपन्यास लिखा। इस उपन्यास के भी सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं। किसान आंदोलन को फैलाने में लेखकों , साहित्यकारों की बड़ी भूमिका रही है। मैथिली शरण गुप्त लिखित खंड किसान काव्य 1916 में लिखा हुआ है। ऐसी मार्मिक वेदना के साथ लिखा गया है कि कहा नहीं जा सकता। निराला ने 1924 में बादल राग किसानों को केंद्रित कर लिखा। भारत में आज किसान, युवक और प्रेमी तीनों की आत्महत्या की जा रही है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने कल्पना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, सराय पीपलथला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2001/08862)

मुरादाबाद में 34.67 करोड़ से बनेगा 100 बेड का क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल

विधायक, डीएम और सीडीओ ने किया भूमिपूजन

मुरादाबाद।

स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक बेहतर ढंग से प्रभावी बनाने और हर जरूरतमंद को उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं से आच्छादित करने के उद्देश्य से मुरादाबाद को आगामी 18 महीनों में 100 बेड का क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल मिल जाएगा। विधायक रितेश गुप्ता ने जिलाधिकारी अनुज सिंह और मुख्य विकास अधिकारी सुश्री मृणाली अविनाश जोशी के साथ भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने विधिवत भूमिपूजन किया और निर्माण कार्य का शुभारंभ कराया। 03 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में करीब 34.67 करोड़ रूपए की लागत से अत्याधुनिक सुविधाओं से

लैस 06 मंजिला बिल्डिंग बनेगी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ कुलदीप सिंह ने बताया कि इस क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल में ग्राउंड फ्लोर पर इमरजेंसी, डायग्नोस्टिक, रेड एवं येलो जोन वार्ड, प्रथम तल पर मातृत्व सेवाएं, न्यूबॉर्न क्रिटिकल केयर, वन स्टॉप सेंटर, द्वितीय तल पर डायलिसिस यूनिट, आइसोलेशन रूम्स, तृतीय तल पर आइसोलेशन वार्ड, चौथे तल पर हाई डिपेंडेंसी यूनिट, पांचवे तल पर आईसीयू और छठे तल पर ऑपरेशन थियेटर और रिकवरी से जुड़ी सेवाएं उपलब्ध रहेंगी।

मौहब्बत के साथ खड़ा होने वाला ही असली इंसानः अहमद

मौ0 दीपक से मिले कांग्रेस नेता

मुरादाबाद। उत्तराखंड के कोटद्वार में एक मुस्लिम बुजुर्ग की बाबा के नाम से दुकान को लेकर चर्चाओ में आये दीपक कुमार उर्फ मो. दीपक ने दिल्ली में लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी के साथ ऑल इंडिया कोंग्रेस अल्पसंख्यक सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मुरादाबाद निवासी मुहम्मद अहमद खान से मुलाकात की। मुलाक़ात के बाद श्री अहमद ने कहा कि नफ़रत के दौर में जो मोहब्बत के साथ खड़ा हो, वही असली इंसान होता है। आज मेरे साथ तस्वीर में मौजूद दीपक कुमार उर्फ मोहब्बत का दीपक, जिन्होंने कोटद्वार में नफ़रत के खिलाफ मजबूती से आवाज़ उठाई और भाईचारे का पैग़ाम दिया। ऐसे लोग समाज की असली ताक़त होते हैं, जो धर्म और जाति से ऊपर उठकर इंसानियत की बात करते हैं। हम सबको मिलकर मोहब्बत, अमन और

एकता का संदेश फैलाना है।

मशहूर निर्यातक विपिन कुमार लोहिया का निधन

मुरादाबाद।

श्री राम बालाजी धाम बाबा नीब करोरी आश्रम ट्रस्ट मुरादाबाद के संरक्षक एवं प्रसिद्ध निर्यातक विपिन कुमार लोहिया (डिजाइनको) का आज बीमारी के चलते निधन हो गया। 25 फरवरी को लोहिया का अन्तिम संस्कार होगा। विपिन कुमार लोहिया के निधन पर टीएमयू के कुलाधिपति सुरेश जैन, मण्डलायुक्त आन्जनेय कुमार सिंह, जिलाधिकारी अनुज सिंह, विधायक / विधान परिषद सदस्यगण रितेश कुमार गुप्ता, डॉ. जयपाल सिह व्यस्त, ठाकुर रामवीर सिंह, सत्यपाल सिंह सैनी, डॉ हरि सिंह ढिल्लो, राम गोपाल उर्फ गोपाल अन्जान, भाजपा के पूर्व अध्यक्ष चौधरी भूपेन्द्र सिंह, विधायक बढ़ापुर कुँवर सुशांत सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. शैफाली सिंह चौहान, महापौर विनोद अग्रवाल, विजय भान सिंह यादव, भाजपा महानगर अध्यक्ष गिरीश भंडूला, समाजसेवी गण सरदार गुरविन्दर सिंह, डॉ. अरविन्द गोयल, सुशील कुमार शर्मा, डा. प्रदीप शर्मा, बाबा संजीव आकांक्षी, मंसूर उस्मानी, धीरशान्त दास शोक व्यक्त किया है।

रमज़ान में टाइम मैनेजमेंट : रोज़ा और नमाज़ के साथ संतुलित ज़िंदगी

मुरादाबाद। रमज़ान बरकतों और रहमतों का महीना है। इस महीने में अल्लाह तआला हमें एक खास ट्रेनिंग देता है, और वह है टाइम मैनेजमेंट की। सहरी का वक्त तय, इफ्तार का वक़्त तय, पाँचों नमाज़ों के औक़ात तय। यानी रमज़ान हमें सिखाता है कि एक मोमिन की ज़िंदगी बेतरतीब नहीं, बल्कि वक़्त के हिसाब से चलने वाली होनी चाहिए। टाइम मैनेजमेंट क्यों ज़रूरी है। नायब सदर मरकज़ी जमीयत अहले सुन्नत मुरादाबाद मुफ्ती दानिश कादरी ने बताया कि क़ुरआन में आता है कि बेशक नमाज़ मोमिनों पर वक़्त मुक़र्रर में फ़र्ज़ की गई है। इस आयत से साफ़ पता चलता है कि इस्लाम वक़्त की पाबंदी चाहता है। अगर नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़ी जाए

तो पूरा दिन अपने आप सही ढंग से बँट जाता है। इसलिए रमज़ान में सबसे पहले अपनी नमाज़ का शेड्यूल मजबूत करें। रमज़ान में बेहतर टाइम मैनेजमेंट कैसे करें। सुबह की सही शुरुआत सहरी से थोड़ा पहले उठें। तह'जुद और दुआ के लिए कुछ मिनट निकालें। फिर सहरी करें और फ़ज्र की नमाज़ अदा करें। फ़ज्र के बाद 15-20 मिनट क़ुरआन पढ़ने की आदत डाल लें। दिन की शुरुआत ही इबादत से होगी तो बरकत महसूस होगी। दिन का प्लान बनाएं: चाहे आप नौकरी करते हों, कारोबार या तालीम में हों, अपना दिन पहले से तय करें। जरूरी काम पहले निपटाएँ। कोशिश करें कि बेवजह बातें और मोबाइल का इस्तेमाल कम हो। आराम का सही वक्तः ज़ुहर के बाद थोड़ा आराम कर लें। इससे थकान कम होगी और शाम तक रोज़ा आसान लगेगा। अस्र के बाद इबादतः अस्र के बाद का वक़्त बहुत कीमती है। यह दुआ की कबूलियत का वक़्त है। इस समय सोशल मीडिया से दूर रहें और तिलावत, ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार करें। इफ्तार में सादगीः हल्का और सादा खाना लें। ज़्यादा खाने से सुस्ती आती है और तरावीह में ध्यान नहीं लगता। रात का संतुलनः ईशा और तरावीह के बाद बहुत देर तक फालतू जागना ठीक नहीं। पर्याप्त नींद लें ताकि अगला दिन ताज़गी से गुज़रे। नौजवानों के लिए खास बातः मेरे प्यारे नौजवानों, रमज़ान में अपनी आदतों को सुधारें। रोज़ का एक छोटा टारगेट बनाएं, जैसे रोज़ आधा पारा पढ़ना या पाँच वक्त की नमाज़ जमाअत से पढ़ना। छोटे-छोटे कदम बड़ी कामयाबी देते हैं। रमज़ान असल में टाइम मैनेजमेंट की बेहतरीन ट्रेनिंग है। अगर हमने इस महीने में अपने वक़्त को सही इस्तेमाल करना सीख लिया, तो पूरी ज़िंदगी में कामयाबी और सुकून मिलेगा। अल्लाह तआला हमें रोज़ा और नमाज़ की पाबंदी के साथ बेहतर टाइम मैनेजमेंट की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

पांच युवाओं को यूथ आइकॉन सम्मान से किया गया सम्मानित

मुरादाबाद।

मेरा युवा भारत युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वावधान में विकसित भारत युवा संसद एवं विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन संपूर्ण भारत में किया जा रहा है। इस कड़ी में जनपद मुरादाबाद में दोनों ही कार्यक्रमों का आयोजन आज 24 फरवरी को किया गया। यह कार्यक्रम मनोहरपुर स्थित जाडस संस्थान में आयोजित करवाया गया कार्यक्रम के बारे में उप निदेशक अंकित कुमार गौर ने बताया कि कार्यक्रम के प्रथम सत्र में विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम आयोजित हुआ युवा कनेक्ट कार्यक्रम के मंच पर सदस्य विधान परिषद सत्यपाल सिंह सैनी बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए एवं इस मंच पर 5 यूथ आइकॉन सीताराम योग के क्षेत्र से पूजा रानी संगीत क्षेत्र रोहन समाजसेवा के व मनोज पर्वतारोही एवं अभिव्यक्ति पत्रकारिता के क्षेत्र से अपने अनुभव साझा करने के लिए एकत्र हुए। पाँचों वक्ताओं को यूथ आइकॉन सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का दूसरा सत्र युवा संसद आरंभ हुई जिसकी अध्यक्षता डॉ दीपक मेहंदी मैंदिरत्ता कृषि वैज्ञानिक द्वारा की गई। इस युवा संसद में चयनित प्रतिभागियों ने आपातकाल के 50 वर्ष एवं इसके सवक मुख्य विषय पर अपने विचार रखे और इस सत्र से चयनित 10 प्रतिभागी अगले माह विधानसभा लखनऊ में आयोजित होने वाले रा'यस्तरीय युवा संसद प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। कार्यक्रम अधिकारी रंजीत कुमार सैनी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान युवाओं को संपूर्ण जनपद से आमंत्रित किया गया एवं 18 से 25 वर्ष के आयु के युवाओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया अनुसार लगभग 700 आवेदन ऑनलाइन प्राप्त हुए और 92 चयनित प्रतिभागियों ने मुरादाबाद में प्रतिभाग किया जिसमें से मोहिनी, उन्नति, हिमांशी शर्मा, दीपांशु, रोहित चौधरी तमन्ना ,आदि को रा'यस्तर के लिए चयनित किया गया कार्यक्रम में अमित कुमार, विकास,कुमार, रवीन्द्र,सिंह चंचल ने विशेष भूमिका निभाई कार्यक्रम का संचालन उन्नति चौधरी द्वारा किया गया।

होली व्यवस्थित ढंग से मनाने पर हुई चर्चा

मुरादाबाद।

एकादशी और होली हो व्यवस्थित रूप से मनाने के संबंध में की गयी। बैठक की अध्यक्षता कमेटी के अध्यक्ष गुलफाम सिंह यादव ने की। बैठक में तीन ब्लाकों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए । बैठक में पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षों का अधिक कटान न हो, जगह जगह होलिका दहन होने से सड़क क्षतिग्रस्त न हो और अपव्यय भी अधिक न हो, इस दृष्टि से एक ही स्थान पर होलिका दहन करने पर सहमति बनी। होलिका स्थल पर पर्याप्त मात्रा में रेत बिछाने की व्यवस्था हुई ताकि सड़क क्षतिग्रस्त न हो और यह भी व्यवस्था की गयी कि होलिका स्थल पर पर्याप्त स्वछता और रोशनी रहे । व्यवस्थाओं को पूर्ण करने हेतु दायित्व भी सौंपे गये। एकादशी के दिन शोक संतिप्त परिवारों में एक साथ जाकर सवेदना व्यक्त करने और दिवंगत की आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना करने का समय निर्धारित किया गया। होली को गाय के गोबर से बने उपलों से बनाने, औषधीय पदार्थों से बनी सामग्री से वेद मंत्रों की सहायता से आहुति दे कर दहन करने पर सहमति बनायी गयी। होलिका दहन के अगले दिन ब्लाकों में चौपई निकालकर घर घर जाकर होली मिलन करके समरसता का संदेश दिये जाने का वातावरण बनाकर समाज में अ'छी परम्पराओं को बढ़ावा देने का संकल्प लिया। बैठक में रमेश सिंह आर्य एडवोकेट डा फूल सिंह, विवेक कुमार, प्रकाश वीर आर्य, जगदीश प्रसाद सागर एडवोकेट, विपिन चौहान सुंदर लाल यश गर्ग संदीप चौधरी, राजकुमार सैनी अमित श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

टीएमयू का फिजिकल एजुकेशन कॉलेज फिरचैंपियन ऑफ द चैंपियंस

इंटर कॉलिजिएट स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप -2026

मुरादाबाद।

तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद की इंटरकॉलिजिएट स्पोर्ट्स चैंपियनशिप-2026 में 90 अंकों के संग टिमिट कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन ने प्रथम स्थान प्राप्त करके चैंपियन ऑफ द चैंपियंस का खिताब अपने नाम किया। तीर्थंकर मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर 52 अंकों के साथ द्वितीय और कॉलेज ऑफ सीसीएसआईटी 42 अंकों के साथ तृतीय स्थान पर रहा। फिजिकल एजुकेशन कॉलेज ने 11 गोल्ड, 02 सिल्वर और 02 ब्रांज मेडल्स अपनी झोली में किए।

मेडिकल कॉलेज ने 07 गोल्ड, 02 सिल्वर और 05 ब्रांज मेडल्स, जबकि सीसीएसआईटी कॉलेज 02 गोल्ड, 09 सिल्वर और 05 ब्रांज मेडल्स अपने अपने किए। इसके अतिरिक्त कॉलेज ऑफ नर्सिंग ने 25 अंक, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेज ने 21 अंक, कॉलेज ऑफ फार्मेसी और कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट

ने 16-16 अंक, कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ने 8 अंक, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन ने 4 अंक, कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी ने 3 अंक, डेंटल कॉलेज एंड आरसी और कॉलेज ऑफ पैरामेडिकल साइंस ने 1-1 अंक अर्जित किए। समापन सम्मान समारोह में वीसी प्रो. वीके जैन ने विजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी, पदक औ प्रमाण पत्र प्रदान किए। चैंपियन ऑफ द चैंपियंस ट्रॉफी फिजिकल एजुकेशन को प्रदान की गई, जबकि परम्परागत नियमानुसार ट्रॉफी का औपचारिक हस्तांतरण मेडिकल कॉलेज को किया गया। इस मौके पर डीन स्टुडेंट्स वेलफेयर प्रो. एमपी सिंह, मेडिकल कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल प्रो. प्रीथपाल सिंह मटरेजा, फिजिकल एजुकेशन कॉलेज के प्राचार्य प्रो. मनु मिश्रा आदि की उल्लेखनीय मौजूदगी रही। प्रो. वीके जैन ने कहा, खेल केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला है। खिलाड़ियों ने यह सिद्ध किया है कि अनुशासन, परिश्रम और समर्पण से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यह केवल पदक जीतने का अवसर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता विकसित करने का मंच है। टीएमयू का उद्देश्य स्टुडेंट्स को केवल शैक्षणिक रूप से ही नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और नैतिक रूप से भी सशक्त बनाना है।

खेल हमें हार और जीत दोनों को स्वीकार करना सिखाते हैं। जो आज विजेता हैं, उन्हें विनम्र बने रहना चाहिए, और जो पीछे रह गए हैं, उन्हें इसे प्रेरणा के रूप में लेकर और अधिक मेहनत करनी चाहिए। उल्लेखनीय है, इस चैंपियनशिप में कुल 14 संकायों/कॉलेजों की टीमों ने क्रिकेट(महिला एवम् पुरुष), फुटबॉल (पुरुष), वॉलीबॉल (पुरुष), बैडमिंटन, बास्केटबॉल (पुरुष एवम् महिला), कैरम (पुरुष), कबड्डी (पुरुष एवम् महिला), शतरंज (पुरुष एवम् महिला), टेबल टेनिस (पुरुष एवम् महिला), बैंच प्रेस और खो-खो (पुरुष एवम् महिला) सहित विभिन्न खेल स्पर्धाओं में भाग लिया।

शहर में भूकंप से बचाव के लिए आयोजित हुई मॉक ड्रिल

मुरादाबाद। शहर स्थित पीवीआर बिल्डिंग में भूकंप से सुरक्षा संबंधी मॉक ड्रिल आयोजित हुई। इस दौरान जिला प्रशासन, एनडीआरएफ, सिविल डिफेंस, फायर सर्विस, तहसील प्रशासन और आपदा मित्रों द्वारा सम्मिलित रूप से आयोजित इस मॉक ड्रिल के माध्यम से मॉल के कर्मचारियों के साथ साथ आमजन को भूकंप के दौरान बचाव और सावधानियों के बारे में प्रशिक्षित किया गया। इस दौरान आपदा की स्थिति का प्रदर्शन किया गया और स्थानीय लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे आपदा मित्रों ने सबसे पहले जिला स्तर पर संचालित कंट्रोल रूम को टेलीफोन के माध्यम से सूचित किया। उन्होंने बताया कि भूकंप के कारण बिल्डिंग क्षतिग्रस्त हो गई है, कई लोग फंसे है और आग लगने की घटना भी घटित हो गई है इसलिए जिला प्रशासन से तत्काल मदद की आवश्यकता है। आपदा विशेषज्ञ द्वारा एडीएम वित्त एवं राजस्व को सूचित करते हुए सभी संबंधित विभागों को मौके पर त्वरित रूप से पहुंचने के लिए सूचित किया गया। तहसीलदार सदर और उप नियंत्रक सिविल डिफेंस, सीएफओ, एफएसओ आपदा मित्रों के साथ आपदा विशेषज्ञ तत्काल मौके पर पहुंचे और कमांड एवं कंट्रोल की कार्यवाही शुरू की गई। घटना स्थल पर आग बुझाने के साथ ही सर्च एवं रेस्क्यू कार्य प्रारंभ किया गया तत्पश्चात एनडीआरएफ द्वारा अपने खोजी कुत्तों की मदद से बिल्डिंग में फंसे लोगों की स्थिति का पता लगाया गया और काफी देर की मशक्कत के बाद लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। मौके पर मौजूद लोगों को भूकंप के संबंध में टेबल टॉक के माध्यम से जानकारी दी गई। जिल आपदा विशेषज्ञ प्रदीप कुमार ने बताया कि जिलाधिकारी एवं अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व के निर्देशानुसार नियमित तौर पर मॉक ड्रिल का आयोजन किया जा रहा है।

राजधानी में सुरक्षा और सेवा को बढ़ावा, पूर्व अग्निवीरों को मिलेगा मौका और मददगारों को सम्मान का एलान

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार की योजनाओं और एलान से राजधानी में सुरक्षा और सेवा भाव को बढ़ाने की तैयारी है। दिल्ली सरकार ने अग्निवीरों को अवसर देने के लिए आरक्षण की पहल की है और केंद्र की ओर से दिल्ली में राह-वीर योजना लागू करने की घोषणा की गई है। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने दिल्ली पुलिस (नियुक्ति एवं भर्ती) नियम, 1980 के नियम 9 में संशोधन को मंजूरी दे दी है। इस संशोधन के तहत अब दिल्ली पुलिस में पुरुष कांस्टेबल के पद पर भर्ती में पूर्व अग्निवीरों को 20 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा। संशोधित नियमों से पूर्व अग्निवीरों को भर्ती प्रक्रिया में कई रियायतें भी मिलेंगी। पूर्व अग्निवीरों को शारीरिक दक्षता परीक्षा से छूट दी जाएगी और निर्धारित अधिकतम आयु सीमा में तीन वर्ष की छूट प्रदान मिलेगी। विशेष रूप से अग्निवीर योजना के पहले बैच के अभ्यर्थियों को निर्धारित अधिकतम आयु सीमा 25 वर्ष से अतिरिक्त पांच वर्ष की छूट दी जाएगी। दिल्ली पुलिस में वर्तमान पुरुष कांस्टेबल के 42,451 स्वीकृत पद हैं। इन पदों पर सीधी भर्ती के माध्यम से नियुक्ति होती है और आयु सीमा 18 से 25 वर्ष निर्धारित है। भर्ती नियमों में संशोधन के बाद बड़ी संख्या में पूर्व अग्निवीर इन पदों के लिए पात्र हो सकेंगे। अग्निवीर योजना 2022 में भारतीय युवाओं को सशस्त्र बलों में चार वर्ष की सेवा के लिए भर्ती करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। अब दिल्ली पुलिस में आरक्षण और आयु छूट की व्यवस्था से पूर्व अग्निवीरों को अर्धसैनिक और सैन्य अनुभव के आधार पर कानून-व्यवस्था तंत्र में समायोजित होने का अवसर मिलेगा। सरकारी सूत्रों के अनुसार, यह निर्णय पूर्व अग्निवीरों के पुनर्वास और रोजगार के अवसरों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे दिल्ली पुलिस को प्रशिक्षित, अनुशासित और अनुभवयुक्त मानव संसाधन मिलेगा, वहीं पूर्व सैनिकों को समाज सेवा के क्षेत्र में नई भूमिका निभाने का अवसर भी प्राप्त होगा। केंद्र सरकार की राह-वीर योजना राजधानी में भी लागू की जाएगी। इस योजना के तहत सड़क हादसों में गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को गोल्डन ऑवर के भीतर अस्पताल पहुंचाने वाले नागरिकों को 25 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि और प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा। ऐसे मददगारों को कानूनी संरक्षण भी प्रदान किया जाएगा ताकि वे बिना किसी भय के मानवता के नाते सहायता कर सकें। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोमवार को यह एलान किया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली जैसे महानगर में रोजाना लाखों वाहन सड़कों पर चलते हैं। हादसों की स्थिति में समय पर चिकित्सा सहायता मिलना जीवन और मृत्यु के बीच निर्णायक साबित हो सकता है। उन्होंने बताया कि गोल्डन ऑवर यानी दुर्घटना के बाद का पहला घंटा अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यदि इस अवधि में घायल व्यक्ति को उचित इलाज मिल जाए तो मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि कई बार लोग कानूनी झंझट, पुलिस पूछताछ या अदालत की कार्यवाही के डर से घायल की मदद करने से हिचकिचाते हैं। राह-वीर योजना ऐसे सभी भय को दूर करने की दिशा में एक ठोस कदम है। यह योजना मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 की धारा 134ए के तहत अधिसूचित गुड सेमेरिटन नियमों के अनुरूप है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट पहुंचे अविमुक्तेश्वरानंद

पॉक्सो एक्ट में दर्ज मुकदमे के खिलाफ अग्रिम जमानत याचिका दायर की

प्रयागराज।

झूंसी थाने में पॉक्सो एक्ट में दर्ज किए गए मुकदमे को स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में चुनौती देते हुए अग्रिम जमानत मांगी है। उनके अधिवक्ता राजर्षि गुप्ता की तरफ से राज्य सरकार को नोटिस भिजवाया गया है। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद, उनके शिष्य मुकुंदानंद सहित चार अन्य के खिलाफ रविवार को झूंसी पुलिस ने बच्चों से कुकर्म के आरोप में मुकदमा दर्ज किया था। बीते शनिवार को विशेष न्यायाधीश (पाक्सो कोर्ट) ने झूंसी पुलिस को अभियोग पंजीकृत कर विवेचना करने का आदेश दिया था। अदालत ने कहा था कि विवेचना निष्पक्ष, स्वतंत्र और शीघ्र की जाए। आशुतोष ब्रह्मचारी की ओर से बीते माह मुकदमा दर्ज कराने के लिए कोर्ट में अर्जी दी गई थी। इसमें स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और उनके शिष्य मुकुंदानंद सहित अन्य पर महाकुंभ के दौरान नाबालिग लड़कों से कुकर्म का आरोप लगाया था।

अदालत ने पीड़ित बच्चों का बयान दर्ज करने के बाद पुलिस कमिश्नर से मामले की जांच करके आख्या मांगी। कोर्ट ने कहा है कि पीड़ित बच्चों के कथन, स्वतंत्र साक्षियों के बयान, पुलिस कमिश्नर की ओर से प्रस्तुत जांच प्रतिवेदन, संकलित सामग्री के परीक्षण से पता चलता है कि आरोप गंभीर प्रकृति के हैं। लैंगिक उत्पीड़न के स्पष्ट आरोप शामिल हैं, जो संज्ञेय अपराध प्रकट करते हैं। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने आरोपों को झूठा बताया है और एफआइआर को अधिवक्ता के माध्यम से हाई कोर्ट में चुनौती दी है।

590 करोड़ के घोटाले पर सरकार का बड़ा एक्शन

आईडीएफसी बैंक सहित कई अधिकारियों पर एफआईआर दर्ज, विजिलेंस की जांच शुरू

पंचकूला। पंचकूला स्थित विजिलेंस थाने में 590 करोड़ रुपये की कथित धोखाधड़ी के मामले में IDFC First Bank के अधिकारियों और अन्य संबंधित लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। यह कार्रवाई हरियाणा स्टेट विजिलेंस एंड एंटी-करप्शन ब्यूरो द्वारा की गई है। जांच एजेंसी ने बैंक अधिकारियों, पब्लिक सर्वेंट्स और कथित साजिश में शामिल अन्य लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की विभिन्न गंभीर धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। एसीबी के अनुसार, धोखाधड़ी के इस मामले में बीएनएस की धारा 316(5) (आपराधिक विश्वासघात) और 318(4) (गंभीर धोखाधड़ी) लगाई गई है। इसके अतिरिक्त, सरकारी धन के कथित ट्रांसफर के लिए फर्जी दस्तावेजों के इस्तेमाल के आरोप में धारा 338 और 340(2) के तहत भी कार्रवाई की गई है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 13(2) और बीएनएस की धारा 61(2) (आपराधिक साजिश) को भी एफआईआर में शामिल किया गया है। मामले को लेकर हरियाणा विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता का बयान भी सामने आया है। उन्होंने विधानसभा बजट सत्र के दौरान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा सदन में दिए गए वक्तव्य पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि राज्य सरकार पूरी पारदर्शिता के साथ काम कर रही है। ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि जब भी इस प्रकार का मामला सामने आता है, मुख्यमंत्री कार्रवाई करने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाते। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिन लोगों ने यह घोटाला किया है, उनसे एक-एक पैसा वसूला जाएगा। वहीं, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी सदन में कहा कि इस मामले में चाहे कोई बैंक कर्मचारी हो, निजी व्यक्ति हो या सरकारी अधिकारी किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 2.80 करोड़ लोगों की मेहनत की कमाई की सुरक्षा सरकार की प्राथमिकता है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। फिलहाल एसीबी द्वारा मामले की गहन जांच की जा रही है और आने वाले दिनों में इस प्रकरण में और खुलासे होने की संभावना है।

ममता बनर्जी ने केरलम के सहारे भाजपा को बताया बंगाल विरोधी, दोहराई राय का नाम बदलने की मांग; जड़े आरोप

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केरल को उसके नए नाम केरलम के लिए बधाई देते हुए मंगलवार को केंद्र सरकार को याद दिलाया कि पश्चिम बंगाल राय का भी अपना नाम बदलकर बांग्ला रखने का प्रस्ताव है। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के एक पोस्ट के अनुसार मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भाजपा को बांग्ला विरोधी (बंगाल विरोधी) बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह राज्य की विरासत और भाषा के प्रति कोई सम्मान नहीं दिखाते हैं। टीएमसी ने लिखा, ममता बनर्जी ने केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा केरल राय का नाम बदलकर केरलम रखने की मंजूरी पर केरलवासियों को हार्दिक बधाई दी। साथ ही, उन्होंने केंद्र को याद दिलाया कि पश्चिम बंगाल का नाम बदलकर बांग्ला रखने का ऐसा ही प्रस्ताव क्यों से दबा पड़ा है।

ममता बनर्जी ने कहा कि पश्चिम बंगाल की वैध मांग को सिर्फ इसलिए खारिज नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि राय ने भाजपा के सामने झुकने से इनकार कर दिया। टीएमसी ने लिखा, हर चुनाव के मौसम में पीएम मोदी और अमित शाह बंगाल में आकर मगरमच्छ के आंसू बहाते हैं और हमारी धरती, हमारी संस्कृति, हमारे लोगों से प्यार करने का दिखावा करते हैं। पोस्ट में आगे लिखा गया, यह नाटक बंद करो। इन बांग्ला-विरोधियों को हमारी विरासत के लिए कोई सम्मान नहीं, हमारी भाषा के लिए कोई आदर नहीं, हमारे आदर्शों के लिए कोई सम्मान नहीं और हमारी गरिमा के लिए कोई चिंता नहीं।

जब कोई राय अपनी पहचान का दावा करता है तो हम खुश होते हैं, लेकिन बंगाल इस प्रतिशोधी भेदभाव को स्वीकार नहीं करेगा। टीएमसी ने लिखा, बंगाल की जायज मांग को सिर्फ इसलिए नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि हम भाजपा के हाई कमान के सामने झुकने से इनकार करते हैं। टीएमसी सरकार ने राय का नाम बदलकर बांग्ला करने का प्रस्ताव पारित किया था और कई बार केंद्र के सामने यह मांग रखी थी। ममता बनर्जी ने राय का नाम बदलने की मांग को फिर से उठाया है, जो इस साल के अंत में होने वाले पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों से पहले आया है। टीएमसी एक बार फिर भारी जीत दर्ज करने की कोशिश करेगी, जबकि भाजपा भी सत्ता पर नजर गड़ाए हुए है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और रेलवे परियोजनाओं के लिए 12,236 करोड़ रुपये मंजूर, केरल का नाम बदलकर केरलम

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने केरल का नाम बदलकर केरलम करने को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने नए पीएम कार्यालय सेवा तीर्थ में हुई पहली कैबिनेट बैठक में हुए फैसलों की जानकारी दी। बुनियादी ढांचे को मजबूती देने और कनेक्टिविटी बढ़ाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए, केंद्रीय कैबिनेट ने कुल 12,236 करोड़ रुपये के विभिन्न विकास प्रोजेक्ट्स की मंजूरी दी है। इस बड़े निवेश का मुख्य हिस्सा रेलवे और शहरी परिवहन के विस्तार पर केंद्रित है, जिसमें गोंदिया-जबलपुर रेल लाइन के दोहरीकरण के लिए सबसे अधिक 5,236 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। इसके अलावा, रेलवे नेटवर्क को सुदृढ़ करने के लिए पुनरख-किऊल की तीसरी और चौथी लाइन के लिए 2,668 करोड़ रुपये तथा गम्हरिया-चांडिल की तीसरी व चौथी लाइन के लिए 1,168 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई है। विमानन और शहरी यातायात को सुगम बनाने के उद्देश्य से श्रीनगर में 1,667 करोड़ रुपये की लागत से एक नए इंटीग्रेटेड एयरपोर्ट टर्मिनल के निर्माण और अहमदाबाद मेट्रो के फेज 2B के विस्तार (1,067 करोड़ रुपये) को भी कैबिनेट की हरी झंडी मिल गई है। वित्तीय आवंटन के अलावा, कैबिनेट ने कई महत्वपूर्ण नीतिगत और कृषि संबंधी फैसलों पर भी मुहर लगाई है। एक प्रमुख नीतिगत फैसले के तहत, राज्य का नाम केरल से बदलकर केरलम करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। ऊर्जा क्षेत्र की दक्षता बढ़ाने के लिए नए पावर सेक्टर रिफॉर्म्स को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। इसके साथ ही, कृषि क्षेत्र और किसानों को वित्तीय सुरक्षा देते हुए, कच्चे जूट के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य तय किया गया है, जिसके लिए 430 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

अब पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में होगी चुनाव के दिन राज्य पुलिस कर्मियों की तैनाती, चुनाव आयोग का आदेश

नई दिल्ली। मतदान के दिन मतदान केंद्रों पर तैनात किए जाने वाले राज्य पुलिस कर्मियों की तैनाती की प्रक्रिया संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में तैनात केंद्रीय पुलिस पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में कराई जाएगी।

चुनाव आयोग ने यह आदेश दिया है, ताकि पारदर्शिता को बढ़ाया जा सके। चुनाव में पुलिस कर्मियों की इस तरह से तैनाती की प्रक्रिया (रैंडमाइजेशन) से निष्पक्षता सुनिश्चित होती है। इसके तहत स्थानीय पुलिस को उनके मौजूदा थाना क्षेत्रों से बाहर तैनात किया जाता है, ताकि किसी तरह का पक्षपात न हो। चुनाव आयोग ने रायों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों और पुलिस महानिदेशकों को पत्र लिखा है। इसमें आयोग ने कहा कि भविष्य में होने वाले सभी लोकसभा और विधानसभा चुनावों में मतदान के दिन मतदान केंद्रों पर राय पुलिस कर्मियों की तैनाती की प्रक्रिया संबंधित जिले के निर्वाचन क्षेत्रों में तैनात पुलिस पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में होगी। एक अधिकारी ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक ही राय पुलिस कर्मियों की तैनाती करते हैं और वे आगे भी यह काम करते रहेंगे।

लेकिन अब यह पूरी प्रक्रिया केंद्रीय पुलिस पर्यवेक्षकों की मौजूदगी में होगी। केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी, असम और पश्चिम बंगाल में अप्रैल में विधानसभा चुनाव हो सकते हैं। इन रायों में यह नई व्यवस्था लागू की जाएगी। चुनाव के दौरान कानून-व्यवस्था बनाए रखने, मतदान केंद्रों की सुरक्षा करने, संवेदनशील मतदाताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने और इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के स्ट्रॉन्ग रूम की निगरानी के लिए राय पुलिस, राय सशस्त्र पुलिस के साथ-साथ केंद्रीय बलों को भी तैनात किया जाता है। चुनाव आयोग ने कहा है कि इन नए निर्देशों की जानकारी सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों, पुलिस अधीक्षकों, पुलिस आयुक्तों, निर्वाचन अधिकारियों और सेक्टर अधिकारियों को दी जानी चाहिए।

दंगे करवाना चाहते हैं मोहब्बत की दुकान चलाने वाले- डिप्टी सीएम बृजेश पाठक

लखनऊ।

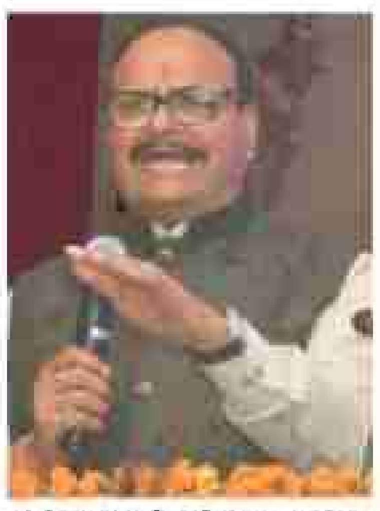

यूपी के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि मोहब्बत की दुकान चलाने का दावा करने वाले देश में दंगे करवाना चाहते हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी देश को नीचा दिखाना चाहते हैं। कांग्रेस के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को टारगेट करना अब एक फैशन बन गया है। दिल्ली में हुई एआई समिट में दुनिया भर से प्रतिनिधि आए थे। कांग्रेस के लोगों का नग्न होकर प्रदर्शन करना देश को शर्मसार करने वाला है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी एआई को देश के कोने-कोने में फैलाना चाहते हैं। यही उनका विजन है जबकि कांग्रेस और राहुल गांधी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सरकार पर हर दिन आरोप लगाते रहते हैं। राहुल गांधी का मकसद झूठ बोलकर देश को नीचा दिखाना है। वो विदेशी प्रोपेगेंडा फैला रहे हैं। उनको समझना चाहिए कि सूरज पर थूकने से अपना ही चेहरा गंदा होता है। उनका एजेंडा देश की छवि को धूमिल करना है। वो विदेशी मंचों से भारत को अपमानित करते हैं। ये चीन से राजीव गांधी फाउंडेशन में फंड लेते हैं। डिप्टी सीएम ने कहा कि भारत आर्थिक जगत में सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए आगे बढ़ रहा है। कांग्रेस ने देश का अपमान किया है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और अखिलेश यादव एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं।

संजय राउत का पीएम मोदी सरकार पर तंज, गुलामी से नफरत तो ट्रंप के गुलाम क्यों?

मुंबई। राष्ट्रपति भवन में सी. राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण होने के बाद, शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला करते हुए गुलामी पर उसके रुख पर सवाल उठाए। राउत ने भारत की विदेश नीति पर निशाना साधते हुए पूछा कि अगर सरकार गुलामी का विरोध करती है, तो वह अमेरिका और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ संबंध क्यों रखती है? उन्होंने भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को चुनौती दी, फ्रांस से राफेल जेट की खरीद की आलोचना की और नई दिल्ली के निर्माण में लुटियंस समेत कई हस्तियों के योगदान को उजागर किया। संजय राउत ने कहा कि अगर आप गुलामी की बात करते हैं, तो आप ट्रंप के गुलाम क्यों बन गए? अगर आपको गुलामी से इतनी नफरत है, तो आपको भारत-अमेरिका व्यापार समझौता रद्द कर देना चाहिए... आपने फ्रांस से राफेल क्यों खरीदा?... लुटियंस समेत कई लोगों ने नई दिल्ली के निर्माण में योगदान दिया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा सोमवार को राष्ट्रपति भवन में स्वतंत्र भारत के पहले और एकमात्र भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद मैट रिडले ने ये टिप्पणी की है। सोमवार को एडविन लुटियंस के परपोते मैट रिडले ने राष्ट्रपति भवन से लुटियंस की प्रतिमा हटाए जाने पर दुख व्यक्त किया, जिसके स्थान पर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा स्थापित की गई है। राष्ट्रपति भवन के वास्तुकार एडविन लुटियंस के परपोते रिडले ने X पर एक पोस्ट में कहा कि यह जानकर दुख हुआ कि लुटियंस (मेरे परदादा) की प्रतिमा को दिल्ली स्थित उस राष्ट्रपति भवन से हटाया जा रहा है जिसे उन्होंने ही डिजाइन किया था। पिछले साल मैं इसके साथ यहाँ था। उस समय मुझे आश्चर्य हुआ था कि उनके नाम को आधारशिला से क्यों हटा दिया गया था।

यूथ कांग्रेस अध्यक्ष की गिरफ्तारी पर कांग्रेस ने सरकार को घेरा, कहा- बब्बर शेरों की गिरफ्तारी कायरता का प्रमाण है

नई दिल्ली। राहुल गांधी ने कहा है कि इंडियन यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष उदय भानु चिब की गिरफ्तारी सरकार की तानाशाही प्रवृत्ति और कायरता का सबूत है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने एक्स हैंडल पर लिखा कि शांतिपूर्ण विरोध हमारी ऐतिहासिक धरोहर है। यह हमारे खून में है और हर भारतीय का लोकतांत्रिक अधिकार है। उन्होंने कहा, मुझे युवा कांग्रेस के अपने बब्बर शेर साथियों पर गर्व है, जिन्होंने निडर होकर देश के हित में आवाज उठाई है। अमेरिका के साथ हुए ट्रेड डील में देश के हितों से समझौता किया गया है। यह समझौता हमारे किसानों और टेक्सटाइल उद्योग को नुकसान पहुंचाएगा तथा हमारे डेटा को अमेरिका के हाथों में सौंप देगा। यह मामला राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान इंडियन यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के शर्टलेस प्रोटेस्ट से जुड़ा है। दिल्ली पुलिस ने इंडियन यूथ कांग्रेस (युवा कांग्रेस) के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु चिब समेत आठ लोगों को गिरफ्तार किया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी समेत कई अन्य नेताओं ने भी यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी का विरोध किया है। राहुल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि अमेरिका के साथ डील के दौरान भारत के हितों से समझौता किया गया है। इस सच्चाई को देश के सामने रखने के लिए युवा कांग्रेस अध्यक्ष उदय भानु चिब और इंडियन यूथ कांग्रेस के अन्य साथियों की गिरफ्तारी तानाशाही प्रवृत्ति और कायरता का प्रमाण है। कांग्रेस पार्टी और मैं अपने बब्बर शेर साथियों के साथ मजबूती से खड़े हैं। सत्ता को सच का आईना दिखाना अपराध नहीं, देशभक्ति है। डरो मत-सच और संविधान हमारे साथ हैं।

राहुल बोले-मोदी पर एपस्टीन-अडाणी के केस का दबाव

किसान महाचौपाल से राहुल गांधी की हुंकार

भोपाल। कांग्रेस पार्टी मंगलवार को भोपाल में अमेरिकी व्यापार समझौते के विरोध में एक भव्य किसान महाचौपाल का आयोजन किया। किसान महाचौपाल को वरिष्ठ नेता राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे ने संबोधित किया। इस दौरान राहुल गांधी ने जमकर केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर निशाना साधा। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा कि इस साल इतिहास में पहली बार लोकसभा में विपक्ष के नेता को बोलने की अनुमति नहीं दी गई। जैसे ही मैंने भाषण शुरू किया, मुझे बीच में ही रोक दिया गया। राहुल गांधी ने दावा किया कि पूर्व सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे (सेवानिवृत्त) ने एक किताब लिखी है जिसमें उन्होंने जिक्र किया है कि जब चीनी टैंक भारतीय सीमा में घुस रहे थे, तो उन्होंने राजनाथ सिंह को आदेश लेने के लिए फोन किया, लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। उन्होंने कहा कि अजीत डोवाल और एस जयशंकर ने भी जवाब नहीं दिया... युद्ध का फैसला प्रधानमंत्री लेते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री ने जवाब नहीं दिया, वे अपने कमरे में छिप गए और सेना प्रमुख से कहा कि वे जो चाहें करें... सेना प्रमुख ने लिखा है कि उस दिन भारतीय सरकार ने उन्हें अकेला छोड़ दिया था। उन्होंने कहा कि यानी- जब आर्मी चीफ को ऑर्डर देने और चीन को रोकने का समय आया तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गायब हो गए। गांधी ने कहा कि अमेरिका के साथ व्यापार समझौता पांच महीने तक रुका रहा क्योंकि इसमें कृषि और कृषि उत्पाद शामिल थे। भारत के किसान, खेत मजदूर और यहां तक कि सरकार भी इसे नहीं चाहती थी। शाम को संसद से निकलने के बाद मोदी ने ट्रंप को फोन किया... उन्होंने झूठ बोला, यह बहाना बनाया कि कांग्रेस की महिला सांसद हमला करने वाली हैं, लेकिन इसके बजाय उन्होंने सीधे फोन किया और कहा कि वह समझौता करने के लिए तैयार हैं।

कांग्रेस नेता ने कहा कि अमेरिका में एपस्टीन की लाखों फाइलें अटकी हुई हैं; ऐसे वीडियो और संदेश हैं जिन्हें जारी नहीं किया गया है। हरदीप पुरी का नाम उन्हें धमकाने के लिए जारी किया गया था। क्या प्रधानमंत्री मोदी को अनिल अंबानी के साथ अपने संबंधों पर सफाई देनी चाहिए?... अडानी कोई छोटी कंपनी नहीं है; यह भाजपा की वित्तीय संरचना है। अडानी पर अमेरिका में आपराधिक आरोप हैं। वह अमेरिका या यूरोप नहीं जा सकते।

अमेरिका में चल रहे मामले में निशाना मोदी हैं, अडानी नहीं... ये दो कारण थे जिनकी वजह से मोदी ने संसद से इस्तीफा दिया। उन्होंने संसद छोड़कर ट्रंप को फोन किया और कहा, सर, आप जो भी कहेंगे मैं करने को तैयार हूं, और उन्होंने देश को बेच दिया... नरेंद्र मोदी समझौता कर चुके हैं; उन्हें फंसाया गया और अमेरिका-भारत व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया। राहुल ने हुंकार भरते हुए कहा कि मैं इस मंच से प्रधानमंत्री मोदी को चुनौती देता हूं चूंकि अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने इस समझौते पर अपना फैसला सुना दिया है, इसलिए अमेरिका के साथ हुए समझौते को रद्द करें... इस समझौते में नरेंद्र मोदी ने देश का डेटा अमेरिका को सौंप दिया। मैं अपने युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कहना चाहता हूं कि आप शेर हैं; आप मोदी से नहीं डरेंगे। मैं देश के युवाओं से कहना चाहता हूं कि जब नरेंद्र मोदी भाषण दें, तो उनकी आंखों में देखिए; आपको उनकी आंखों में डर दिखाई देगा।